04 - हौसलों की उड़ान

05 - जीवन भर संघर्षों से जूझता रहा कलाकार

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 11 जनवरी, 2026

06 - सोशल मीडिया और सत्य : तथ्य जांच का महत्व

07 - नए साल में भी परदे में नया कुछ नहीं

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 125, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुबह

फोटो: बंसीलाल परमार

सुप्रभात

दु:ख के संवादों को
लिखकर भेज दिया
बीज और खादों को
लिखकर भेज दिया।

रिसते हुए ज़ख्म भी
हमने लिख भेजें
जुल्मों के स्वादों को
लिखकर भेज दिया।

जीत नहीं पाये
बेशक कोई बाज़ी
अपने प्रतिवादों को
लिखकर भेज दिया।

आवाजों को कैसे
रोंदा जाता है
नूतन ईज़ादों को
लिखकर भेज दिया।

वक्त कहां था बात
सुगम की सुनने का
तीखी फरियादों को
लिखकर भेज दिया।

– **महेश कटारे 'सुगम'**

जंग दुश्मन का मनोबल तोड़ने के लिए लड़ते हैं

● डोभाल बोले-हम मनोरोगी नहीं कि शव देखकर खुशी मिले

● हमने किसी के मंदिर नहीं तोड़े,हम कहीं लूटने नहीं गए- हमारी सभ्यता बहुत विकसित थी। हमने किसी के मंदिर नहीं तोड़े। हम कहीं लूटने नहीं गए। हमने किसी दूसरे देश या लोगों पर हमला नहीं किया, लेकिन हम अपनी सुरक्षा और खुद को लेकर आने वाले खतरों को समझने में नाकाम रहे। प्रधानमंत्री कार्यालय के मुताबिक, पीएम नरेंद्र मोदी 12 जनवरी को विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग में देश और विदेश से आए 3,000 से अधिक युवाओं से संवाद करेंगे।

एनएसए बोले-मौजूदा लीडरशिप ने 10 साल में देश बदला

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने शनिवार को कहा कि युद्ध राष्ट्र की इच्छाशक्ति के लिए लड़े जाते हैं। उन्होंने कहा, हम साइकोपैथ (मनोरोगी) नहीं हैं, जिन्हें दुश्मन के शव या कटे हुए अंग देखकर संतोष या सुकून मिले। लड़ाइयां इसके लिए नहीं लड़ी जाती। उन्होंने कहा कि युद्ध किसी देश का मनोबल तोड़ने के लिए लड़े जाते हैं, ताकि वह हमारी शर्तों पर आत्मसमर्पण करें और हम अपने लक्ष्य हासिल कर सकें। अजीत डोभाल ने शनिवार को नई दिल्ली में विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग के उद्घाटन समारोह के दौरान ये बाते कहीं। उन्होंने युवाओं से कहा कि आप अपनी इच्छाशक्ति बढ़ा सकते हैं। वही इच्छाशक्ति राष्ट्रीय शक्ति बन जाती है।

मनोबल बनाए रखने के लिए लीडरशिप जरूरी होती है

आज हम बहुत भाग्यशाली हैं कि हमारे देश में ऐसा नेतृत्व है। एक ऐसा लीडर जिसने 10 सालों में देश को कहां से कहां पहुंचा दिया। आज का स्वतंत्र भारत हमेशा से उतना स्वतंत्र नहीं था। इसके लिए हमारे पूर्वजों ने बड़े बलिदान दिए। अपमान झेला और बेबसी के दौर से गुजरे। कई लोगों को फांसी हुई। हमारे गांव जलाए गए। हमारी सभ्यता को नुकसान पहुंचाया गया। यह इतिहास हमें एक चुनौती देता है कि आज भारत के हर युवा के अंदर एक आग होनी चाहिए। 'बदला' शब्द शायद बहुत अच्छा न लगे, लेकिन बदला ताकतवर एहसास है।

लोक निर्माण विभाग, लोक अर्थात् जनता और निर्माण अर्थात् सृजन से जन-जन की सेवा के संकल्प को कर रहा है साकार : मुख्यमंत्री

लोकपथ 2.0 लॉन्च, यात्रा के दौरान मिलेगा ब्लैक स्पॉट अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि इंजीनियरर्स की क्षमता के आधार पर हम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन के वर्ष 2047 के विकसित और आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न देख रहे हैं। लोक निर्माण विभाग अपने नाम के अनुरूप लोक अर्थात् जनता और निर्माण अर्थात् सृजन से राज्य के जन-जन की सेवा के संकल्प को साकार कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एक राजनेता होने के साथ सन्यासी भाव से भारत की प्रगति और क्षमता निर्माण के लिए प्रयासरत हैं। लोक निर्माण विभाग में विकास कार्यों को नई ऊंचाइयां देने की क्षमता है। भगवान श्रीराम के काल में नल और नील ने समुद्र पर पुल निर्माण करने की तकनीक खोज ली थी। लंका विजय के बाद भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण जी पुष्पक विमान से अयोध्या आए थे। भगवान विश्वकर्मा ने पुष्पक विमान बनाया, जिसमें सभी को समाहित करने की क्षमता थी। यह सभी को विकास और कल्याण में साथ लेकर चलने के भाव की अभिव्यक्ति थी। वर्तमान में भी सभी की सुविधा और जीवन में सभी को आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से ही निर्माण कार्य जारी हैं। मध्यप्रदेश का लोक निर्माण विभाग नई तकनीक और समय का सदुपयोग करते हुए अधोसंरचना विकास कार्यों को गति प्रदान कर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को लोक निर्माण विभाग के नवाचारों, डिजिटल पहल और अभियंताओं की क्षमता निर्माण पर केंद्रित राज्य स्तरीय कार्यक्रम सह प्रशिक्षण-सत्र को रवीन्द्र भवन में संबोधित कर रहे थे।

लोक निर्माण विभाग का प्रत्येक कार्य जनसामान्य के कल्याण के लिए- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारतीय परंपरा में तकनीक, ज्ञान और नवाचार का समृद्ध इतिहास रहा है। हमारे प्राचीन ग्रंथ और सांस्कृतिक उदाहरण यह सिखाते हैं कि सामूहिक क्षमता, बुद्धि और समर्पण से असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में इसी भाव के साथ आज के अभियंता आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए जनहित के कार्यों को और अधिक प्रभावी बना रहे हैं। देश के इंजीनियर मुंबई में समुद्र पर ब्रिज, पहाड़ों के बीच से टनल और हाई-वे का निर्माण कर रहे हैं, जो तकनीक और निर्माण प्रक्रिया की दृष्टि से विश्व स्तरीय है। प्रधानमंत्री श्री मोदी की मंशा के अनुसार लोक निर्माण विभाग का प्रत्येक कार्य जनसामान्य के कल्याण के लिए है। सड़क, पुल, भवन और अन्य संरचनाएँ जब गुणवत्ता, संवेदनशीलता और दूरदर्शिता के साथ बनती हैं, तो वे जन-जीवन को सरल, सुरक्षित और सुविधाजनक बनाती हैं। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा अपनाए जा रहे नवाचार, आधुनिक तकनीक और कार्यों की गति इस बात का प्रमाण हैं कि लोक निर्माण विभाग नई सोच के साथ आगे बढ़ रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोक निर्माण विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना की।

भागीरथपुरा के हर रहवासी का स्वास्थ्य परीक्षण, सभी को मिलेंगे स्वास्थ्य कार्ड

● प्रभावितों के स्वास्थ्य का फॉलोअप रखा जाएगा, नए बोरिंग पर रोक लगेगी

इंदौर। भागीरथपुरा क्षेत्र सहित पूरे इंदौर शहर की जल एवं स्वास्थ्य व्यवस्थाओं को अधिक मजबूत बनाने के लिए शनिवार को एक बैठक आयोजित की गई। निर्णय लिया गया कि भागीरथपुरा के 30% क्षेत्र में जल्द ही नर्मदा जल सीधे उपलब्ध कराया जाएगा। शेष 70% क्षेत्र में टैंकरों से शुद्ध नर्मदा जल की आपूर्ति होगी। टैंकर का पानी शुद्ध है, फिर भी नागरिकों को उबालकर पीने की सलाह दी गई है।

बैठक में जनप्रतिनिधियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वर्तमान स्थिति की समीक्षा कर कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए। बैठक में मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भागीरथपुरा में स्थिति तेजी से सामान्य हो रही है और हालात नियंत्रण में है। अब कोई भी गंभीर मामला सामने नहीं है। फिर भी एहतियातन क्षेत्र के हर परिवार का स्वास्थ्य परीक्षण कराने का अभियान शुरू किया जा रहा है। क्षेत्र के 50-60 हजार नागरिकों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए स्वास्थ्य दल तैनात रहेगा। जांच के दौरान यदि किसी प्रकार की समस्या पाई जाती है, तो तत्काल

उपचार एवं फॉलोअप सुनिश्चित किया जाएगा। प्रभावित नागरिकों को स्वास्थ्य कार्ड भी प्रदान किए जाएंगे। नागरिकों की कई जांच निशुल्क की जाएगी।

भागीरथपुरा क्षेत्र में जल जनित घटना के बाद स्थिति में तेजी से सुधार आ रहा है। स्थिति का मैदानी जायजा लेने के लिए आज सुबह अपर मुख्य सचिव द्वय नीरज मंडलोई एवं अनुपम राजन ने जिला प्रशासन, नगर निगम और स्वास्थ्य सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ क्षेत्र का दौरा किया। इस दौरान कलेक्टर शिवम वर्मा और नगर निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल सहित संबंधित अधिकारी मौजूद थे। इसके बाद हुई बैठक में बताया गया कि भागीरथपुरा क्षेत्र में पाइपलाइन का कार्य प्रगति पर है। लगभग 30% क्षेत्र में पाइपलाइन डाली जा चुकी है और उसकी टेस्टिंग भी हो चुकी। जल के सैंपल लेकर निरंतर जांच की जा रही है। पूरी तरह पीने योग्य होने की पुष्टि के बाद तीन दिन के भीतर नर्मदा का पेयजल उपलब्ध कराया जाएगा।

भागीरथपुरा में 114 शासकीय एवं 80 से अधिक निजी ट्यूबवेल हैं। जल परीक्षण में पानी पीने योग्य नहीं पाए जाने पर सभी ट्यूबवेल में क्लोरीनेशन कराया गया है। नागरिकों से अपील की गई है कि ट्यूबवेल का पानी पीने में उपयोग न करें, केवल साफ-सफाई व अन्य घरेलू कार्यों में ही लें। बैठक में यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि अब शहर में नए बोरिंग की अनुमति नहीं दी जाएगी, क्योंकि नए बोरिंग में पेयजल से जुड़ी समस्याएं अधिक सामने आ रही हैं।

बैठक में अपर मुख्य सचिव नीरज मंडलोई ने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा भी भागीरथपुरा क्षेत्र की स्थिति की लगातार समीक्षा और मॉनिटरिंग की जा रही है। उन्होंने कहा कि इंदौर में विकास कार्यों और शुद्ध पेयजल उपलब्धता के लिए सभी आवश्यक मदद दी जायेगी। किसी भी तरह की कमी नहीं आने दी जाएगी। बैठक में जल संसाधन मंत्री तुलसीराम सिलावट, महापौर पुष्यमित्र भार्गव, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री सचिवालय नीरज मंडलोई, इंदौर जिले के प्रभारी अपर मुख्य सचिव अनुपम राजन, संभाग आयुक्त डॉ. सुदाम खाड़े, कलेक्टर शिवम वर्मा, नगर निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल सहित विधायक रमेश मेंदोला, महेन्द्र हार्डिया, मालिनी गौड़, मधु वर्मा, गोलू शुक्ला, सुमित मिश्रा एवं अन्य जनप्रतिनिधि तथा संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c
न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 11 जनवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

मोदी 17 को पहली वंदेभारत स्लीपर का उद्घाटन करेंगे

- गुवाहाटी से कोलकाता के बीच चलेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि कोलकाता और गुवाहाटी के बीच पहली वंदे भारत स्लीपर 17 जनवरी से चलेगी। इसका उद्घाटन पीएम नरेंद्र मोदी पश्चिम बंगाल के मालदा टाउन में करेंगे। यह ट्रेन 6 दिन

कामाख्या और हावड़ा जंक्शन के बीच चलेगी। वहीं, रेल मंत्री के मुताबिक 6 नई अमृत भारत एक्सप्रेस भी लॉन्च की जाएंगी। इनकी सेवाएं 17 और 18 जनवरी 2026 से मिलना शुरू हो जाएंगी। दिल्ली में अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार समारोह में गुरुवार को वैष्णव ने बताया कि भारतीय रेलवे में 2026 में एक बड़ा बदलाव होगा।

बांग्लादेश पर सब चुप, हिंदुओं को बांटना सर्वनाश

- रामानंदाचार्य के प्रकटोत्सव पर सीएम योगी का बड़ा हमला

प्रयागराज (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ हो रही हिंसा को लेकर विपक्षी दलों पर इशारों में बड़ा हमला बोला है। प्रयागराज में जगद्गुरु

रामानंदाचार्य की 726वीं जयंती (प्रकट उत्सव) समारोह को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि आज हिंदू समाज को जाति, मत और संप्रदाय के नाम पर बांटने की कोशिश हो रही है। उन्होंने चेतावनी भरे लहजे में कहा कि यह विभाजन उसी तरह सर्वनाश का कारण बनेगा, जैसा आज बांग्लादेश में देखने को मिल रहा है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि बांग्लादेश के अंदर हिंदुओं के साथ जो कुछ हो रहा है, उस पर तथाकथित सेक्युलरिज्म का ठेका लेकर चलने वाले लोग पूरी तरह चुप हैं।

जयपुर में ऑडी का कहर, 16 को रौंदा एक की मौत

- 10 से ज्यादा ठेले-थड़ियों को उड़ाया, पेड़ से टकराकर रुकी

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर में शुक्रवार रात रेसिंग कर रहे एक ऑडी कार ने कहर मचा दिया। मानसरोवर के भीड़भाड़ वाले इलाके में 120 की रफ्तार से दौड़ रही ऑडी कार पहले बेकाबू होकर डिवाइडर से टकराई, फिर सड़क किनारे लगी फूड स्टॉल्स में घुस गई। इस दौरान वहां 50 से ज्यादा

लोग मौजूद थे। कार करीब 16 लोगों को रौंदते हुए एक पेड़ से टकराकर रुकी। हादसे में एक युवक की मौत हो गई। वहीं, चार लोग गंभीर घायल हैं। आरोपी ड्राइवर सहित तीन लोग फरार हैं। इनमें जयपुर पुलिस का सिपाही भी है। कार सवार एक युवक को भीड़ ने पकड़ लिया।

राम मंदिर के आसपास अब नहीं मिलेगा मीट-मछली

- होम डिलीवरी पर रोक लगाई, पकड़े गए तो लाइसेंस होगा कैंसिल

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में राम मंदिर और पंचकोशी परिक्रमा मार्ग के आस-पास नॉनवेज की बिक्री पर पूरी तरह से रोक लगा दी गई है। होटल-रेस्टोरेंट्स के लिए ये आदेश पहले से ही लागू है। खाद्य विभाग ने गुरुवार को ऑनलाइन खाना डिलीवरी करने वाली कंपनियों पर भी इसे लागू किया है। इस संबंध में होटल, होम स्टे और ऑनलाइन खाना डिलीवरी करने वाली कंपनियों को इसकी जानकारी दी गई है। चेतावनी दी गई है कि उल्लंघन करने पर कार्रवाई की जाएगी। सहायक खाद्य आयुक्त मानिक चंद्र सिंह ने बताया- राम मंदिर और इसके आस पास नॉनवेज की बिक्री पर पहले से रोक है। लेकिन कुछ होटल, गेस्ट हाउस और होम स्टे वाले इसका पालन नहीं कर रहे हैं। शिकायत मिली थी कि यहां पर आने वाले पर्यटकों को ऑनलाइन नॉनवेज मंगाकर परोसा जा रहा है। इसलिए अब राम मंदिर और इसके आस-पास के क्षेत्र में नॉनवेज की ऑनलाइन

डिलीवरी पर रोक लगा दी गई है। मानिक चंद्र सिंह ने कहा कि 8 जनवरी को होटल, गेस्ट हाउस, होम स्टे और ऑनलाइन खाना डिलीवरी करने वाली कंपनियों को इससे अवगत करा दिया है। नियम तोड़ने पर होटल मालिक और संबंधित व्यक्ति के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। इस आदेश का सख्ती से पालन कराया जाएगा। इसकी मॉनिटरिंग की जाएगी। आवश्यकता पड़ने पर कार्रवाई की जाएगी। अयोध्या में नॉनवेज खाने और बेचने पर रोक कोई नई व्यवस्था नहीं है। अमावा के राम मंदिर के पूर्व सचिव और पूर्व आईपीएस अधिकारी आचार्य किशोर कुणाल की पुस्तक 'अयोध्या रीविजिटेड' में इसका उल्लेख मिलता है। पुस्तक के अनुसार ब्रिटिश काल में ही अयोध्या में नॉनवेज की बिक्री और सेवन पर प्रतिबंध लगाया गया था। उसी आदेश के आधार पर तत्कालीन सिटी बोर्ड फैजाबाद ने यह प्रतिबंध लागू किया था, जो आज भी प्रभावी है और जिसे कभी चुनौती नहीं दी गई।

अयोध्या के राम मंदिर में नमाज पढ़ने की कोशिश

- परिसर में घुसे 2 युवक और 1 युवती पकड़े गए

सभी ने खुद को कश्मीर का रहने वाला बताया

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या के राम जन्मभूमि परिसर में शनिवार सुबह 3 लोग घुस गए और नमाज पढ़ने की कोशिश करने लगे। सुरक्षाकर्मियों ने तुरंत उन्हें रोका और हिरासत में ले लिया। पकड़े गए लोगों में 1 युवक, एक 56 साल का व्यक्ति और 1 युवती शामिल है। इन लोगों ने खुद को कश्मीर का रहने वाला बताया है। अभी तक किसी ने इसकी पुष्टि नहीं की है कि आरोपी कौन हैं और कहां के रहने वाले हैं।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, तीनों संदिग्ध हरकतें कर रहे थे। तीनों से राम मंदिर परिसर में बने पुलिस कंट्रोल रूम में पूछताछ की जा रही है कि वो अयोध्या क्यों आए थे। तीनों

राम मंदिर के गेट -1 से घुसे। इसके बाद सीता रसोई के पास अबू अहमद शेख नमाज पढ़ने के लिए बैठ गया। पुलिसवालों ने उसे उसे ऐसा करते देखते ही हिरासत में ले लिया। वह कश्मीर के शोपियां का रहने वाला है। वहीं, पकड़ी गई लड़की नाम सोफिया है। दूसरे युवक का नाम अभी पता नहीं चल पाया है। दरअसल, राम मंदिर में एंट्री करने के दौरान सिर्फ चेकिंग होती है। आधार कार्ड या किसी अन्य परिचय पत्र को चेक नहीं किया जाता। इसी का फायदा उठाकर तीनों राम मंदिर परिसर में एंट्री कर गए। इसके बाद तीनों सीता रसोई तक जा पहुंचे, जो मुख्य मंदिर से 200 मीटर दूर है।

सुवेंदु का ममता को नोटिस, 72 घंटे में मांगा जवाब

मुख्यमंत्री बोली थीं-

- सुवेंदु कोयला घोटाले का पैसा शाह तक पहुंचाते हैं

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के नेता प्रतिपक्ष सुवेंदु अधिकारी ने शुक्रवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को एक कानूनी नोटिस भेजा है। इसमें ममता से 72 घंटे के भीतर अपने दावों के सबूत मांगे हैं। सुवेंदु ने कहा कि ऐसा न करने पर वे ममता के खिलाफ मानहानि का केस करेंगे। दरअसल, ममता ने आरोप लगाया है कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और सुवेंदु अधिकारी कोयला तस्करी मामले में शामिल हैं। कोयला घोटाले का पैसा सुवेंदु के जरिए शाह तक जाता है। बंगाल की मुख्यमंत्री ने कोलकाता में 8 जनवरी को आई-पैक कार्यालय में प्रवर्तन निदेशालय की छापेमारी के विरोध में एक सभा को संबोधित करते हुए ये टिप्पणियां की थीं। सीएम ममता बनर्जी ने ईडी पर दो एफआईआर भी दर्ज कराई है। उन्होंने कोलकाता में मार्च भी निकाला। इसी दौरान बनर्जी ने दावा किया कि उनके पास गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ पेन ड्राइव हैं।

ओडिशा के राउरकेला में 9 सीटर चार्टर्ड विमान क्रैश

राउरकेला (एजेंसी)। ओडिशा के राउरकेला में शनिवार को एक 9-सीटर चार्टर्ड विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में पायलट सहित विमान में सवार सभी 9 लोग घायल हो गए। दुर्घटना के तुरंत बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। सूचना मिलते ही प्रशासन और राहत टीमें मौके पर पहुंचीं और सभी घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया। अधिकारियों के अनुसार, घायलों की हालत स्थिर बताई जा रही है और किसी के जान को फिलहाल खतरा नहीं है। ये विमान इंडिन वन एयर का बताया जा रहा है। विमान में पायलट समेत कुल 9 लाग सवार थे।

- पायलट समेत 9 लोग घायल, सभी अस्पताल में भर्ती

बताया जा रहा है कि विमान राउरकेला से करीब 10 से 15 किलोमीटर दूर गिरा। हादसे की सूचना मिलते ही प्रशासन और संबंधित विभाग सक्रिय हो गए। रेस्क्यू टीमों ने मौके पर पहुंचकर सभी यात्रियों को बाहर निकाला और इलाज के लिए अस्पताल भेजा। सभी घायलों को चिकित्सकीय निगरानी में रखा गया है। वहीं, भुवनेश्वर से पर्यटन विभाग की एक टीम के भी मौके पर पहुंचने की संभावना जताई जा रही है। प्रशासन ने बताया कि दुर्घटना किन परिस्थितियों में हुई, इसकी विस्तृत जांच की जा रही है। जांच पूरी होने के बाद ही वास्तविक कारणों का पता चलेगा।

भोपाल का 'रहमान डकैत' सूरत में गिरफ्तार

देशभर की पुलिस को 20 साल से चकमा दे रहा था, लग्जरी कार और अरबी घोड़ों का शौकीन

भोपाल (नप्र)। देशभर की पुलिस के लिए दो दशक से सिरदर्द बना भोपाल का कुख्यात अपराधी आबिद अली उर्फ राजू उर्फ 'रहमान डकैत' आखिरकार सूरत क्राइम ब्रांच के हत्थे चढ़ गया। भोपाल के कुख्यात 'ईरानी डेरा' से पूरे देश में अपराध का नेटवर्क चलाने वाला यह गैंगस्टर 14 राज्यों में सक्रिय गिरोहों का सरगना बताया जा रहा है। सूरत के लालगेट इलाके में गुप्त ऑपरेशन के तहत उसे बिना गोली चलाए गिरफ्तार किया गया।

क्राइम ब्रांच के मुताबिक, आरोपी 20 साल से नकली सीबीआई अधिकारी, साधु-बाबा के वेश में लूट, धोखाधड़ी, हिंसक वारदात और जिंदा जलाने के प्रयास जैसे गंभीर अपराधों को अंजाम देता रहा। महाराष्ट्र में उस पर मेकोका जैसे सख्त कानून के तहत भी केस दर्ज है।

डीसीपी भावेश रोजिया ने बताया कि इनपुट मिला था कि भोपाल निवासी राजू ईरानी सूरत में किसी बड़ी वारदात की फिराक में आया है। इसी सूचना पर क्राइम ब्रांच ने जाल बिछाकर उसे दबोच लिया। आरोपी 13-14 साल से भोपाल की अमन नगर कॉलोनी में रह रहा था और छह अलग-अलग गैंग ऑपरेट कर रहा था।

लूट के पैसों से ऐशो-आराम की जिंदगी

पुलिस के अनुसार, राजू ईरानी और उसका भाई जाकिर अली लूट के पैसों से लग्जरी कारें, महंगी स्पोर्ट्स बाइक और अरबी घोड़े पालने का शौक पूरा करते थे। इलाके में उनका रुतबा किसी 'डॉन' जैसा था।

महिलाओं-बच्चों को ढाल बनाकर भागता था

जब भी पुलिस दबिश देने पहुंचती, गैंग घर की महिलाओं और बच्चों को आगे कर देता था और मुख्य आरोपी पीछे के रास्तों से फरार हो जाता था। दिसंबर में भोपाल पुलिस ने 150 जवानों के साथ कॉम्बिंग की थी, तब भी वह इसी तरह बच निकला था।

सूचना देने वाले को जिंदा जलाने की कोशिश

पुलिस ने बताया कि जो भी व्यक्ति गैंग की जानकारी देता था, उसे जान से मारने की धमकी दी जाती थी। एक मामले में मुखबिर को परिवार सहित घर में बंद कर जिंदा जलाने का प्रयास किया गया था। इसी केस में आरोपी लंबे समय से फरार था।

सीबीआई अफसर या साधु बनकर करता था लूट

गैंग के सदस्य सफारी सूट पहनकर खुद को सीबीआई या वरिष्ठ पुलिस अधिकारी बताते थे। बुजुर्गों और अकेले लोगों को रोककर सोने-चांदी के जेवर 'सुरक्षा जांच' के नाम पर उतरवा लेते और मौका पाकर फरार हो जाते थे। कई बार साधु-बाबा बनकर भी लोगों को ठगा गया।

पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, आरोपी हरियाणा, यूपी, दिल्ली, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल समेत 14 राज्यों में लूट, ठगी और संगठित अपराध के मामलों में वॉन्टेड है। दिल्ली क्राइम ब्रांच में वह 2022 से ठगी के एक बड़े केस में भी फरार चल रहा था।

कॉरपोरेट स्टाइल में चलाता था गैंग

राजू ईरानी अपने गैंग को किसी कॉरपोरेट की तरह चलाता था। सदस्य पकड़े जाते तो जमानत, वकील और परिवार की जिम्मेदारी वही उठाता था। बदले में हर वारदात में उसका बड़ा हिस्सा तय रहता था।

2006 से शुरू हुआ अपराध का सफर

आरोपी के खिलाफ पहला मामला 2006 में भोपाल में अपहरण का दर्ज हुआ था। इसके बाद 2014, 2015, 2016 और 2020 में गंभीर हमले और आर्म्स एक्ट के केस दर्ज हुए। पुणे, भिवंडी और कोलकाता तक उसकी आपराधिक गतिविधियां फैली रहीं।

केसी त्यागी की जेडीयू से छुट्टी! पार्टी का किनारा

- पार्टी ने किया साफ-उनसे अब हमारा सरोकार नहीं ● एक दिन पहले नीतिश के लिए मांगा था भारत रत्न

पटना (एजेंसी)। जदयू के सीनियर लीडर रहे केसी त्यागी की पार्टी से छुट्टी हो गई है। हाल के दिनों में केसी त्यागी के कुछ बयानों और गतिविधियों को लेकर पार्टी में असंतोष की खबरें सामने आ रही थीं। सूत्रों के अनुसार, उन्होंने पार्टी लाइन से अलग जाकर बयान दिए थे, जिसके बाद जेडीयू आलाकमान ने उनसे दूरी बनाने का फैसला किया। पार्टी प्रवक्ता नीरज कुमार ने साफ कहा है कि केसी त्यागी जी क्या बोलते हैं, उससे जनता दल यूनाइटेड का कोई लेना-देना नहीं है। वहीं प्रवक्ता राजीव रंजन के हालिया बयान से यह साफ हो गया है कि जेडीयू का अब केसी त्यागी से कोई औपचारिक संबंध नहीं रह गया है। हाल ही में बांग्लादेशी क्रिकेटर को आईपीएल से हटाने के फैसले का विरोध किया था। पार्टी लाइन से अलग जाकर कहा था कि खेल और राजनीति को अलग रखना चाहिए। कल शुक्रवार को केसी त्यागी ने पीएम मोदी को चिट्ठी लिखकर नीतिश कुमार को भारत रत्न देने की मांग की। हालांकि, सियासी गलियारे में इसे डैमेज कंट्रोल के लिए उठाया गया कदम बताया जा रहा है। केसी त्यागी ने बिहार के मुख्यमंत्री को भारत रत्न देने की मांग को लेकर प्रधानमंत्री मोदी को पत्र लिखा था।

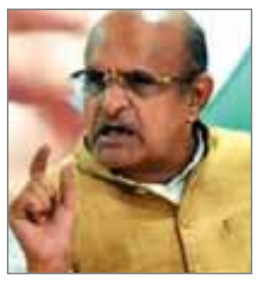

दुनिया भर की सैन्य रणनीति में आ रहा बड़ा बदलाव

- सीडीएस अनिल चौहान ने बताई हकीकत, ऑपरेशन सिंदूर का किया जिक्र ● कहा-अब तकनीक युद्ध का मुख्य चालक बनती जा रही है, न कि भूगोल

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर में मुंह की खाने के बाद पाकिस्तान की मुश्किलें बढ़ी हुई थीं। यही वजह है कि उसे सैन्य से लेकर संवैधानिक संशोधनों को लेकर मजबूर होना पड़ा था। इस बात का जिक्र भारत के चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल अनिल चौहान ने किया है। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र कर पाकिस्तान को करारा जवाब दिया है। सीडीएस ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान को संवैधानिक संशोधनों में जल्दबाजी करने और अपने उच्च रक्षा संगठन का पुनर्गठन करने के लिए मजबूर किया। ये सब इस बात का एक अप्रत्यक्ष संकेत था कि ये ऑपरेशन इस्लामाबाद के पक्ष में नहीं गया था। सीडीएस जनरल अनिल चौहान, गोखले इंस्टीट्यूट ऑफ

पॉलिटिक्स एंड इकोनॉमिक्स में आयोजित पुणे पब्लिक पॉलिसी फेस्टीवल 2026 में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन के बाद पाकिस्तान की ओर से उठाए गए कदम, जिसमें सैन्य कमांड आर्किटेक्चर में बदलाव शामिल हैं, उन गंभीर कमियों को दर्शाते हैं जो संघर्ष के दौरान सामने आई। पाकिस्तान ने ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ कमेटी के चेयरमैन का पद खत्म कर दिया। उसकी जगह चीफ ऑफ डिफेंस फोर्सेज बनाया है। साथ ही, नेशनल स्ट्रैटेजी कमांड और आर्मी रॉकेट फोर्सेज कमांड की भी स्थापना की है। जनरल चौहान ने बताया कि इससे एक ही व्यक्ति के हाथ में जमीन, संयुक्त और रणनीतिक सैन्य शक्तियों का केंद्रीकरण हो गया है।

दुनियाभर में कैसे बदल रही सैन्य रणनीति

जनरल चौहान ने कहा कि दुनिया भर में सैन्य रणनीति में एक बड़ा बदलाव आ रहा है। अब तकनीक युद्ध का मुख्य चालक बनती जा रही है, न कि भूगोल। उन्होंने कहा कि परंपरागत रूप से, पानीपत से प्लासी तक, भूगोल ने सैन्य अभियानों को परिभाषित किया। आज, तकनीक रणनीति को चला रही है। उन्होंने चेतावनी दी कि भविष्य के संघर्षों में संपर्क रहित और गैर-घातक साधनों का अधिक इस्तेमाल की संभावना है। सीडीएस ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर और पहले के टकरावों जैसे उरी सर्जिकल स्ट्राइक, डोकलाम और गलवान गतिरोध, और बालाकोट एयर स्ट्राइक से कई सबक सीखे गए हैं। खासकर हायर डिफेंस संगठनों से जुड़े एक्शन में ये स्पष्ट नजर आया। उन्होंने बताया कि ये ऑपरेशन इनोवेटिव, स्थिति के हिसाब से कमांड व्यवस्था के जरिए किए गए थे। उन्होंने कहा कि अब हम एक स्टैंडर्ड सिस्टम पर काम कर रहे हैं जिसे सभी में लागू किया जा सके।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने शनिवार को रतलाम में चेतन्य काश्यप फाउंडेशन द्वारा आयोजित मेधावी छात्र प्रतिभा सम्मान समारोह में छात्र-छात्राओं को सम्मानित कर संबोधित किया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश शासन के मंत्री चेतन्य काश्यप, संभाग प्रभारी सुरेश आर्य, जिला अध्यक्ष प्रदीप उपाध्याय, विधायक मथुरालाल डामर एवं अनिल कालूखेड़ा उपस्थित रहे।

नर्मदा लाइन फूटी...20 फीट उठा फव्वारा

घरों में भरा पानी, सड़क-चौराहे भी तर-बतर, जाम में फंसी गाड़ियां

भोपाल (नप्र)। भोपाल के 11 नंबर इलाके में शुक्रवार सुबह नर्मदा पाइप लाइन फूट गई। पानी के प्रेशर की वजह से करीब 20 फीट ऊंचा फव्वारा भी फूट पड़ा। इससे न सिर्फ लाखों लीटर पानी बह गया, बल्कि घरों में भी भर गया। सड़क और चौराहे पानी से तर-बतर हो गए। 10 नंबर और 11 नंबर के अधिकांश इलाकों में नर्मदा लाइन से पानी की सप्लाई की जाती है। शनिवार को भी पानी सप्लाई किया जा रहा था। तभी फ्रेक्चर अस्पताल के पास लाइन लीकेज हो गई और पानी का फव्वारा उठ गया। रहवासियों ने बताया कि अचानक पाइप लीकेज हो गई। इस वजह से आसपास के घरों में भी पानी भर गया।

लाइन कैसे फूटी? यह साफ नहीं

नर्मदा लाइन कैसे फूटी? यह साफ नहीं हो पाया है। करीब एक घंटे तक पानी बहता रहा। इसके बाद निगम अमला मौके पर पहुंचा और सुधार कार्य में जुट गया। हालांकि, तब तक लाखों लीटर पानी बह गया था। बताया जाता है कि जिस जगह पर लाइन फूटी, वहीं पर कुछ मजदूर निर्माण से जुड़ा काम कर रहे थे।

सड़क तालाब बन गई

नर्मदा लाइन फूटने के बाद सड़क ने तालाब की शक्ल ले ली। इस वजह से गाड़ियां भी फंस गईं। जब पानी का प्रेशर कम हुआ तो लोग निकलने लगे। जिस जगह पर लाइन फूटी, वह 10 नंबर से 11 नंबर की ओर जाती है।

छात्रा ने फांसी लगाकर सुसाइड किया

घर के तीसरे फ्लोर पर बने कमरे में मिला शव, दुपट्टे से बने फंदे पर लटका था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कृषक नगर करोंद में रहने वाली 21 वर्षीय छात्रा ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। पुलिस ने अस्पताल की सूचना पर मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। घटना शुक्रवार रात की है, जबकि पीएम के बाद बॉडी शनिवार की दोपहर परिजनों के हवाले कर दी गई है। पुलिस के मुताबिक वैशाली ठाकुर पुत्री ओम सिंह ठाकुर (21) कृषक नगर करोंद की रहने वाली थी और बीबीए प्रथम वर्ष की छात्रा थी। बीती रात छोटा भाई मां के कहने पर खाना खाने के लिए बहन को बुलाने तीसरे फ्लोर स्थित कमरे में पहुंचा। जहां उसने दुपट्टे से बने फंदे पर बहन के शव को लटका देखा। शोर मचाकर परिजनों को बुलाया। परिजनों ने किसी तरह बॉडी को फंदे से उतरा और प्राइवेट अस्पताल पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने चेक करते ही उसे मृत घोषित कर दिया। अस्पताल की सूचना पर पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

नहीं मिला सुसाइड नोट, मोबाइल जब्त- पुलिस को घटनास्थल से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। मृतिका के मोबाइल फोन को पुलिस ने जब्त कर लिया है। जिसका परीक्षण कराया जाएगा और कॉल डिटेल खंगाली जाएगी। पुलिस को दिए बयानों में परिजनों ने बताया की वैशाली ने कभी किसी परेशानी का जिक्र नहीं किया। लिहाजा सुसाइड के सही कर्म का खुलासा नहीं हो सका।

मुख्यमंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी दिवस पर शुभकामनाएं दीं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अंतरराष्ट्रीय हिन्दी दिवस की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि हिन्दी हमारे लिए भाषा के साथ देश के गौरवशाली इतिहास व परंपराओं की अविरल धारा और जुड़ाव का अप्रतिम माध्यम है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विश्व स्तर पर हिन्दी को समृद्ध बनाने वाले सभी साहित्य साधकों का अभिवादन किया।

नशीला पदार्थ पिलाकर 1 लाख 40 हजार की ठगी

पहले मोबाइल फोन हासिल किया, फिर ऑनलाइन रकम ट्रांसफर की

भोपाल (नप्र)। भोपाल में परिचित युवक ने पानी में कुछ नशीला पदार्थ देने के बाद दुकानदार से मोबाइल हासिल कर लिया। इसकी मदद से फोन पे के जरिए 1 लाख 40 हजार रुपए अपने खाते में ट्रांसफर कर लिए। जिसका खुलासा फोन पे हिस्ट्री से हुआ। बाद में फरियादी ने थाने में शिकायत कर दी। शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। छोला मंदिर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक नवजीवन कॉलोनी में रहने वाले महेश तिवारी जनरल स्टोर की दुकान चलाते हैं।

सीताराम कुर्मी नाम के व्यक्ति से उनकी पुरानी पहचान है। गत 27 नवंबर को सीताराम ने महेश को मिलने के लिए भानपुर इलाके में बुलाया था। बातचीत के दौरान महेश को प्यास लगी तो सीताराम ने उसे पानी दे दिया।

पानी पीते ही चक्कर आने लगे थे

सीताराम का दिया हुआ पानी पीते ही महेश को चक्कर आने लगे। इस पर महेश ने सीताराम से कहा मुझे जल्द ही घर छोड़ दो। घर जाते वक्त सीताराम ने महेश का मोबाइल फोन अपने पास रख लिया। बाद में वह मोबाइल लेकर चला भी गया। महेश ने जब फोन मांगा तो उसने टालमटोली करना फोन उसके पास होने की बात से ही इंकार कर दिया। महेश के मोबाइल फोन में फोन पे एप भी था जिसके जरिए वह दो बैंक खातों को ऑपरेट करता था। सीताराम ने इसी एप के जरिए महेश दोनों बैंक खातों से करीब 1 लाख 40 हजार रुपए निकाल लिए। महेश ने मामले की शिकायत पुलिस को की थी।

भोपाल निगम की गोशाला में मृत मिले 6 गोवंश

हिंदूवादी संगठनों का प्रदर्शन, स्लॉटर हाउस मामले में आयोग सदस्य का बड़ा बयान

भोपाल (नप्र)। भोपाल में नगर निगम की अरवलिया स्थित गोशाला में 6 गोवंश मृत मिलने पर हिंदूवादी संगठनों ने हंगामा कर दिया। इसे लेकर संगठन पदाधिकारियों ने ईंटखेड़ी थाने में शिकायत भी की। कहा कि गायें भूख के मारे गोबर मिक्स चारा खा रही हैं। दोषियों पर कड़ी कार्रवाई हो।

विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के पदाधिकारियों ने निगम कर्मचारियों की लापरवाही से गायों की मौत होने की बात कही है। शुक्रवार देर रात वे गोशाला पहुंचे थे। यहां मुख्य गेट पर ताला लगा था। इसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस की मौजूदगी में नगर निगम के कुछ कर्मियों को बुलवाकर जब अंदर जाकर देखा तो 6 गोवंश मृत पाए गए। वहीं, 4 गंभीर बीमार स्थिति में थे।

गोशाला प्रबंधन ने अंदर ही एक बड़ा गड्ढा खोदा था। आरोप है कि इसमें मृत गोवंश को चोरी-छिपे दफनाने की तैयारी थी। विरोध करते हुए हिंदूवादी संगठनों ने सद्बुद्धि के लिए श्री हनुमान चालीसा का पाठ भी किया। तब जाकर निगम के एडीसी देर रात मौके पर पहुंचे और दोषियों पर कार्रवाई करने की बात कही।

आवेदन देकर मृत गोवंश को पोस्टमार्ट्म के लिए भेजा

प्रदर्शन के दौरान प्रांत सह गोशाला संपर्क प्रमुख विनोद जोहरे समेत वीर सावरकर, नितिन साहू, राजेंद्र नामदेव, रवि कुशवाह, अभिषेक शर्मा, राकेश रायकवार, गौरव मिश्रा, अभिषेक कुशवाह, कैलाश कुशवाह आदि भी मौजूद थे। थाने में आवेदन देने के बाद मृत गोवंश के शव को पोस्ट मार्टम के लिए पशु अस्पताल भिजवाया गया।

गोमांस मिलने के मामले में सियासत भी गर्म

इधर, स्लॉटर हाउस की गाड़ी में मिले मांस में गोमांस की पुष्टि होने के बाद सियासत भी गरमा गई है। कांग्रेसियों के साथ निगम में विपक्षी पार्षद भी शहर सरकार पर हमलावर हैं। सीनियर पार्षद योगेंद्र सिंह गुड्डू चौहान ने कहा कि यह बेहद शर्मनाक है। स्लॉटर हाउस की अनुमति का प्रस्ताव निगम परिषद में नहीं लाया गया। चुपचाप एमआईसी में इसकी अनुमति दे दी गई। जितनी बड़ी मात्रा में गोमांस मिला है, उसका मतलब है कि 650 से अधिक गायों का वध हुआ है। इसके लिए निगम ही जिम्मेदार है।

मानवाधिकार आयोग सदस्य बोले- अवैध घुसपैठियों से गोकशी करवाया जा रहा

स्लॉटर हाउस की गाड़ी में रखे मांस में गोमांस की पुष्टि होने पर राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग सदस्य प्रियंक कानूनगो का भी बयान आया है। सोशल मीडिया पर उन्होंने जिम्मेदारों को कठघरे में शामिल किया है। सोशल मीडिया पर उन्होंने लिखा कि भोपाल में सरकारी पैसे से बने नगर निगम के स्लॉटर हाउस में गो हत्या कर गोमांस को पैक करके बेचने के मामले में पकड़ाए असलम के विरुद्ध शिकायत थी कि वो अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों को भोपाल लाकर गोकशी करवाता है।

हमने पुलिस को जांच के निर्देश दिए थे। इसके बाद पुलिस ने असलम के बयान को हो सत्य मानकर हमें जो रिपोर्ट प्रेषित की थी, उसके अनुसार तो नगर निगम ही इस कत्लखाने का संचालक है। तो अब तय करिए कि निगम के किस अफसर पर मुकदमा बनना चाहिए?

कानूनगो ने आगे लिखा- इसकी जड़ें गहरी हैं। भोपाल के आदमपुर छावनी में मृत पशुओं के शव के निष्पादन के लिए 5 करोड़ रुपए की सरकारी लागत से बना रेंडरिंगप्लांट भी इसी असलम चमड़े के पास है। ये दोनों संयंत्र इससे वापस लेने होंगे और अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों की जांच कर उन्हें भोपाल की पूज्य मातृ भूमि से बाहर खदेड़ना होगा

छत से धक्का देकर की गई थी छात्रा की हत्या

युवक के खिलाफ हत्या का केस दर्ज, अस्पताल में छोड़कर भाग गया था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के चूनाभट्टी इलाके में इमारत की दूसरी मंजिल से गिरकर छात्रा की मौत के मामले में पुलिस जांच में बड़ा खुलासा हुआ है। युवती को युवक ने छत से छक्का देकर मौत के घाट उतारा था। जांच के बाद पुलिस ने आरोपी युवक के खिलाफ हत्या का प्रकरण दर्ज कर लिया है। वारदात के बाद किसी को आरोपी पर शक न हो इस कारण वह स्वयं युवती को अस्पताल लेकर पहुंचा था। शुरूआती जांच में पता चला है कि घटना के वक्त छात्र और युवती के बीच विवाद हुआ था इसी दौरान युवक ने उसे धक्का देकर नीचे गिरा दिया। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

दोस्त से मिलने उसके घर चली गई थी

पुलिस के मुताबिक बीते बुधवार सुबह प्रिया घर से कॉलेज जाने के लिए निकली थीं, लेकिन कॉलेज की बजाय वह अपने दोस्त तुषार के घर चली गई। तुषार चूना भट्टी इलाके की पारिका सोसाइटी में बने स्टे होम में केयर टेकर का काम करता था। दोपहर 12 बजे यहां की छत से प्रियंका नीचे गिर गई। युवक तुषार उसे अस्पताल लेकर पहुंचा। यहां पर डॉक्टर ने जैसे ही प्रियंका का मृत घोषित किया वैसे ही तुषार प्रियंका को वहां पर छोड़कर चला गया।

परिजनों ने आरोपी पर क्या आरोप लगाए?

पुलिस जांच में प्रेम संबंध का मामला सामने आ रहा है। परिजनों का आरोप है कि तुषार (कपिल) पिछले एक साल से प्रिया को परेशान कर रहा था। तुषार पहले ईश्वर नगर में रहता था, दोनों की दोस्ती हो गई थी। अब पुलिस तुषार की तलाश में जुटी है। एक टीम खंडवा में भी तलाश कर रही है। सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं और अंतिम पोस्टमॉर्ट्म रिपोर्ट नहीं आई है। पुलिस ने तुषार पर हत्या का केस दर्ज कर लिया है।

आज भोपाल में 1151 ट्रैक्टरों की रैली

जंबूरी मैदान से सीएम करेंगे कृषि वर्ष की शुरुआत

भोपाल (नप्र)। आज भोपाल में सीएम डॉ मोहन यादव कृषि कल्याण वर्ष 2026 की शुरुआत करेंगे। भोपाल के कोकता स्थित आरटीओ ऑफिस के करीब रविवार 11 जनवरी को प्रदेश भर से करीब 1151 ट्रैक्टरों के जरिए किसान इकट्ठे होंगे। इस ट्रेक्टर रैली को सीएम डॉ मोहन यादव हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे।

जंबूरी मैदान पर होगा किसानों का जुटान

मप्र की मोहन सरकार इस साल 2026 को कृषि कल्याण वर्ष के तौर पर मना रही है। भोपाल के जंबूरी मैदान पर 11 जनवरी को एक बड़ा किसान सम्मेलन होगा। इस सम्मेलन में सीएम डॉ मोहन यादव कृषि कल्याण वर्ष 2026 की औपचारिक शुरुआत करेंगे।

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने साफ कहा है कि लक्ष्य सिर्फ आयोजन नहीं, बल्कि किसानों की आय बढ़ाना, रोजगार सृजन और कृषि को ग्लोबल मार्केट से जोड़ना है। इसके लिए 3 साल का रोडमैप तय कर गतिविधियां चलाई जाएंगी। खेती से जुड़े सभी विभाग कृषि, सहकारिता, पशुपालन, उद्यानिकी, खाद्य प्रसंस्करण, मत्स्य और ऊर्जा आपसी समन्वय से काम करेंगे।

किसानों की आय बढ़ाने का सीधा प्लान

सरकार ने 2026 को कृषि वर्ष घोषित करते हुए साफ किया है कि हर योजना का अंतिम लक्ष्य किसानों की आमदनी बढ़ाना होगा। इसके लिए कृषि गतिविधियों को तीन साल के लक्ष्य के साथ संचालित किया जाएगा। खेती को सिर्फ उत्पादन तक सीमित न रखकर बाजार, प्रोसेसिंग और एक्सपोर्ट से जोड़ा जाएगा, ताकि किसान को उपज का बेहतर दाम मिल सके।

मशीन, तकनीक और सिंचाई पर फोकस

खेती की लागत घटाने और उत्पादन बढ़ाने के लिए कृषि यंत्रीकरण को बढ़ावा दिया जाएगा। माइक्रो इरिगेशन सिस्टम को प्रोत्साहित कर पानी की बचत के साथ उपज बढ़ाने की योजना है। किसानों को नई तकनीकों से जोड़ने के लिए एग्री स्टेक और डिजिटल कृषि को जमीनी स्तर पर लागू किया जाएगा।

ब्राजील-इजराइल तक ट्रेनिंग लेने जाएंगे किसान

किसानों की क्षमता बढ़ाने के लिए राज्य और संभाग स्तर पर प्रशिक्षण और एक्सपोजर विजिट कराई जाएंगी। सरकार किसानों को देश के उन्नत कृषि राज्यों के साथ-साथ इजराइल और ब्राजील जैसे देशों में आधुनिक खेती, पशुपालन और तकनीकी नवाचार देखने भेजेगी।

गोबर-गोमूत्र के पैसों में गोवा-कोलकाता घूमे अफसर

● तीन अधिकारियों ने 20 शहरों की हवाई यात्रा की ● कमिश्नर ने सरकार को भेजी 3.5 करोड़ के घोटाले की रिपोर्ट

जबलपुर (नप्र)। सरकार की योजना थी कि गाय के गोबर, गौमूत्र और दूध से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से लड़ाई लड़ी जाए। इसके लिए पंचगव्य योजना शुरू की गई और नानाजी देशमुख विश्वविद्यालय को करोड़ों रुपए दिए गए, लेकिन अधिकारियों ने इस रकम को योजना पर खर्च करने की बजाय घूमने-फिरने में उड़ा दिया। पंचगव्य के पैसों से गाड़ियां खरीदी गई, उनकी मरम्मत कराई गई और करीब 3.5 करोड़ रुपए का घोटाला सामने आया। जांच में कई चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं। संभाग कमिश्नर के निर्देश पर तैयार जांच रिपोर्ट जल्द ही सरकार को भेजी जाएगी।

2011 में आई पंचगव्य योजना- राज्य सरकार ने गोबर, गौमूत्र और दूध से बीमारियों पर रिसर्च के लिए 2011 में एक योजना की शुरुआत की, जिसका नाम रखा गया पंचगव्य। इस योजना के तहत नानाजी देशमुख विश्वविद्यालय ने रिसर्च के लिए 8 लाख 75 हजार रुपए का प्रपोजल सरकार को भेजा। जिसमें कि स्वीकृति साढ़े तीन लाख रुपए की हुई। विश्वविद्यालय में इस योजना के तहत यहां पर पदस्थ यशपाल साहनी, सचिन कुमार जैन, गिरिराज सिंह सहित अन्य कर्मचारियों को काम करना था। उद्देश्य था कि पंचगव्य योजना में बेहतर तरीके से काम किया जाए। पर इसके उलट शुरुआत से ही इसमें घोटाला होना शुरू हो गया। योजना की पैसा कहीं और उड़ाया गया, लिहाजा कुछ सालों बाद ही इसे बंद कर दिया गया।

1 करोड़ 92 लाख में खरीदा कच्चा माल- संभाग कमिश्नर धनंजय सिंह तक जब इस घोटाले की जानकारी पहुंची तो उन्होंने जबलपुर कलेक्टर को जांच के निर्देश दिए। कलेक्टर राघवेंद्र सिंह के आदेश पर डिप्टी कलेक्टर रघुवीर सिंह मरावी और जिला कोषालय अधिकारी विनायकी लकरा ने जांच की तो कई अहम जानकारी सामने आई। जांच में पाया गया कि विश्वविद्यालय ने जिस पंचगव्य योजना के तहत साढ़े 3 करोड़ रुपए शासन से लिए थे, उसकी कोई गाइडलाइन ही नहीं थे, याने कि

इस राशि को किस तरह से और कहां खर्च करना है।

जांच में यह भी सामने आया कि करीब 1 करोड़ 92 लाख रुपए में गोबर, गौमूत्र, गमला, कच्चा पदार्थ और कुछ मशीनों की खरीदी की गई, जबकि बाजार में इन मशीनों की कीमत महज 15 से 20 लाख रुपए बताई जा रही है। योजना में शामिल अधिकारियों ने रिसर्च के नाम पर एक नहीं, दो नहीं बल्कि 20 से अधिक बार अलग-अलग शहर और राज्यों की हवाई यात्रा की। डा. यशपाल साहनी, डॉ. सचिन कुमार जैन, रिसर्चर गिरिराज सिंह ने गोवा, हैदराबाद, कोलकाता,बेंगलुरु सहित 20 से अधिक शहरों की हवाई यात्रा की।

योजना के पैसे से नई कार खरीदी- कलेक्टर द्वारा गठित की गई टीम ने जांच में यह भी पाया कि पंचगव्य योजना के पैसों का जमकर बंदरबांट किया गया है। जिस पैसों को योजना में खर्च करना था, उससे ना सिर्फ हवाई यात्रा की गई, बल्कि करीब साढ़े 7 लाख रुपए की नई कार खरीदी गई। इसके साथ ही 7 लाख रुपए पेट्रोल-डीजल और मेंटनेंस में फूंक डाले। वाहनों के सुधार के लिए 3 लाख 50 हजार रुपए लेबर पेमेंट भी कर दी। इसके साथ ही करीब 15 लाख रुपए के टेबल और इलेक्ट्रानिक आइटम खरीद लिए।

किसानों को दिया प्रशिक्षण- पंचगव्य योजना के नाम पर आए साढ़े तीन करोड़ रुपए को यहां-वहां खर्च कर दिया गया। 2011 में शुरू हुई यह योजना आखिरकार 2018 में बंद हो गई। जांच टीम ने यह भी पाया कि 2016 से लेकर 2020 तक में कई किसानों को पंचगव्य योजना के नाम पर प्रशिक्षण करने का दावा भी किया गया है, पर जो लिस्ट सामने आई, उसे एक सादे कागज में बना रखा था, जिसमें शुरुआत के सालों में तारीखों का उल्लेख नहीं था।

यह हैं आरोपों के घेरे में ?

जांच टीम ने पाया कि जिस दौरान पंचगव्य योजना शुरू हुई थी, उस समय यशपाल साहनी, सचिन कुमार जैन, गिरिराज सिंह सहित अन्य लोगों के नाम सामने आए हैं। जांच में यह भी पाया गया है, कि विश्वविद्यालय के कुछ वरिष्ठ अधिकारियों की भूमिका भी संदिग्ध हो सकती है। डिप्टी कलेक्टर और विनायिका लकरा की जांच रिपोर्ट कलेक्टर के माध्यम से कमिश्नर तक पहुंच गई है।

मद से बाहर राशि की खर्च

डिप्टी कलेक्टर रघुवीर सिंह मरावी ने मीडिया को बताया कि जांच में सामने आया कि 1 करोड़ 92 लाख रुपए की मशीनें खरीदी गई है, इसके साथ ही पंचगव्य योजना के मद का पैसा कहीं और खर्च किया गया। 7 लाख 38 हजार का वाहन खरीदा गया। 2 लाख रुपए का पेट्रोल-डीजल जला दिया गया। 2 लाख 76 हजार में वाहन रिपेयर करवाए गए। 2 लाख 22 हजार रुपए वाहन चालकों पर खर्च किए गए। ये सभी खर्च पंचगव्य योजना में नहीं आते है। जांच में यह भी सामने आया कि करोड़ों रुपए खर्च करने के बाद जो आय हुई है, वह मात्र 23 हजार रुपए थी। डिप्टी कलेक्टर ने बताया को शोध की राशि को कहीं और खर्च किया गया है। यह रिपोर्ट कलेक्टर को सौंप दी गई है।

कथा

श्याम कोलारे

हौसलों की उड़ान

दिसंबर माह का अंतिम सप्ताह चल रहा था। ठंडी हवा के झोंके मैदान में फैले घास के तिनकों को सहला रहे थे और ऊपर आसमान में रंग-बिरंगी पतंगें लहरों की तरह डोल रही थीं। कहीं नीली, कहीं लाल, कहीं पीली-मानो आसमान ने अपने लिए उत्सव का परिधान पहन लिया हो। सूरज अपनी व्हीलचेयर पर बैठा, गर्दन उठाए उसी आसमान को एकटक देख रहा था। उसकी आँखों में चमक थी-ऐसी चमक जो केवल सपनों में होती है। आखिर हो भी क्यों न! अगले पंद्रह दिनों बाद शहर में भव्य पतंग मेला लगने वाला था। हर साल की तरह इस बार भी जो सबसे अच्छी पतंगबाज़ी दिखाएगा, उसे 'पतंग बाज सम्मान' से नवाज़ा जाएगा। इस खिताब की चाह में लोग एक महीना पहले से ही गांव के बाहर बने बड़े मैदान में अभ्यास करने जुट गए थे। कोई छोटी पतंगों से कटी लड़ाई की कला निखार रहा था, तो कोई विशाल पतंगों के साथ ऊँची उड़ान का अभ्यास कर रहा था। रंग, आकार और कौशल-सबका संगम उस मैदान में दिख रहा था। सूरज भी कभी इसी मैदान का हिस्सा हुआ करता था। उसे पतंग उड़ाने का ऐसा शौक था कि सुबह से शाम तक उसकी उँगलियों में डोर की सरसराहट रहती। हवा की चाल पहचानना, पतंग को झटका देना, डोर ढील-तनी का संतुलन–ये सब उसे जैसे जन्मजात आता था। लोग कहते, इस लड़के में जादू है। सूरज हँसकर कहता, जादू नहीं, मेहनत।

लेकिन एक साल पहले, इसी उत्साह के बीच एक हादसा हुआ। अभ्यास करते समय अचानक उसका पैर एक गड्ढे में फिसल गया। गिरावट ऐसी थी कि पैर की अंदरूनी नसे बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। इलाज हुआ, महीनों तक दर्द और इंतज़ार चला, पर अंत में सच सामने था; वह अब चलने लायक नहीं बचा। पैरों से अपाहिज हो गया और व्हीलचेयर उसकी साथी बन गई। शुरुआती दिनों में सूरज टूट सा गया। जिस मैदान में उसकी हँसी गूँजती थी, वहीं से वह दूर हो गया। खिड़की से पतंगें देखता और मन ही मन आँसू पी जाता। लोग सहानुभूति जताते, पर उनके शब्द भी कभी-कभी बोझ बन जाते। अब आराम करो, अब यह सब छोड़ दो, ऐसी बातें उसे भीतर तक चुभती थीं। लेकिन समय के साथ सूरज ने समझा कि जीवन का अर्थ केवल चलना नहीं, आगे बढ़ना है। और आगे बढ़ने के लिए हौसले चाहिए-पैर नहीं। उसने अपने कमरे में बैठकर पतंगों के डिज़ाइन बनाना शुरू किया। अलग-अलग आकार, हल्के ढांचे, मजबूत डोर-उसका दिमाग हर दिन उड़ान भरता। वह इंटरनेट पर पतंगबाज़ी के वीडियो देखता, हवा के पैटर्न समझता और नोट्स बनाता। धीरे-धीरे उसकी आँखों में फिर वही चमक लौट आई।

एक दिन उसने अपने दोस्त मोहन को बुलाया। मोहन उसके साथ ही पतंग उड़ाता था। सूरज ने कहा, मैं मैदान में आना चाहता हूँ। मोहन चौंका, लेकिन...? सूरज मुस्कराया, मैं पतंग उड़ाऊँगा-अपने तरीके से। मोहन ने गांव के बच्चों और युवाओं से बात की। अगले दिन मैदान में एक अलग ही दृश्य था। सूरज व्हीलचेयर पर बैठा, उसके सामने एक छोटा स्टैंड लगा था जिसमें पतंग और डोर व्यवस्थित रखी थीं। मोहन और दो बच्चे

उसकी मदद के लिए थे। सूरज निर्देश देता-अब ढील दो... हवा बाईं ओर है... अब खींचो! पतंग ऊपर उठती और आसमान में थिरकने लगती। कुछ ही दिनों में लोग समझ गए कि सूरज केवल पतंग नहीं उड़ाता, वह हवा से संवाद करता है। धीरे-धीरे सूरज की टीम बनने लगी। वह बच्चों को सिखाने लगा-धैर्य, सहयोग और सुरक्षा। वह कहता, पतंगबाज़ी जीतने की नहीं, समझने की कला है। उसने कटी डोर से पक्षियों को बचाने के तरीके बताए, सुरक्षित धागों का इस्तेमाल सिखाया और साफ मैदान की अहमियत समझाई। लोग सुनते, सीखते और मानते भी थे।

पतंग मेले का दिन आ पहुँचा। शहर रंगों से सजा था। ढोल-नगाड़े, बच्चों की हँसी, और ऊपर-आसमान में सैकड़ों पतंगें। प्रतियोगिता शुरू हुई। बड़े-बड़े नाम मैदान में थे। सूरज अपनी टीम के साथ एक कोने में शांत बैठा था। उसकी पतंग खास थी- हल्की, संतुलित और रंगों में संदेश लिखे थे; हौसला, सहयोग, सुरक्षा। जब उसकी बारी आई, सूरज ने गहरी साँस ली। उसने संकेत दिया। पतंग हवा में उठी, धीरे-धीरे ऊँचाई पकड़ी और फिर ऐसी स्थिर उड़ान भरने लगी कि सबकी निगाहें ठहर गईं। न कोई जल्दबाज़ी, न दिखावा-बस सधा हुआ कौशल। हवा तेज़ हुई, पतंग झुकी, लेकिन सूरज के निर्देशों ने उसे संभाल लिया। लोग तालियाँ बजाने लगे। निर्णायक मंडल ने केवल उड़ान नहीं, संदेश भी देखा। अंत में घोषणा हुई-इस वर्ष का पतंग बाज सम्मान... सूरज और उसकी टीम को! मैदान तालियों से गूँज उठा। सूरज की आँखें नम थीं, पर चेहरे पर मुस्कान थी-जीत की, और अपने आप पर विश्वास की।

सम्मान लेते हुए सूरज ने कहा, आज मैंने सीखा है कि असली उड़ान पैरों से नहीं, हौसलों से होती है। जब हम एक-दूसरे का हाथ थामते हैं, तब कोई भी आसमान दूर नहीं रहता। उस दिन के बाद सूरज ने बच्चों के लिए एक प्रशिक्षण केंद्र शुरू किया। वहाँ पतंगबाज़ी के साथ जीवन के सबक सिखाए जाते-धैर्य, अनुशासन, पर्यावरण की जिम्मेदारी और टीमवर्क। गांव और शहर के लोग वहाँ आने लगे। सूरज की कहानी हौसलों की मिसाल बन गई। कहानी यहीं खत्म नहीं होती। हर साल दिसंबर में जब आसमान रंगों से भरता, सूरज व्हीलचेयर पर बैठा मुस्कराता- क्योंकि उसने जान लिया था कि सीमाएँ शरीर की हो सकती हैं, सपनों की नहीं। संदेश यही है: परिस्थितियाँ चाहे जैसी हों, यदि नीयत मजबूत हो, सहयोग मिले और सीखने का जज़्बा जिंदा रहे, तो हर कोई अपनी पतंग आसमान तक पहुँचा सकता है।

एक कविता

पत्थर दिल

देवेन्द्रसिंह सिसौदिया

वो
ईश्वर के समक्ष
घंटों आराधना करता था
सब कुछ
ठीक चल रहा था...
एक दिन
वो ईश्वर को कोसने लगा
मैं इतना परेशानी में हूं
और तुम मेरी कुछ सुनते नहीं
कैसे पत्थर दिल हो

ईश्वर
बोला मेरा पत्थर दिल होना
तुझे दिखाई दिया
पर जब तुम
सच्चे इन्सानों के साथ
अन्याय कर रहे थे
उनकी भावनाओं से खेल रहे थे
तब सोचा था
कि ऐसा पत्थर दिल काम कैसे कर रहे हो

मुझे
पत्थर बनने पर
तुमने ही मजबूर किया है
अगर तुम मोह - माया
से परे हट कर
अपने कर्तव्यों पर
इमानदारी से तटस्थ रहते तो
मैं तुझे कभी
पत्थर दिल नजर नहीं आता।

प्रकृति के साथ खड़ा एक जीवन

स्मृति शेष : माधव गाडगिल

कुमार सिद्धार्थ

लेखक स्तंभकार हैं।

पश्चिमी घाटों के संरक्षण और भारत में पारिस्थितिकी चेतना को वैचारिक गहराई देने वाले प्रख्यात परिस्थितिकीविद् माधव गाडगिल का पुणे में 83 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके जाने से देश ने न केवल एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक खोया है, बल्कि ऐसा चिंतक भी विदा हुआ है, जिसने विकास की दौड़ में प्रकृति और समुदाय की अनदेखी पर लगातार सवाल उठाए। वे पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे और बुधवार देर रात पुणे के एक अस्पताल में उन्होंने अंतिम सांस ली।

माधव गाडगिल का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ जहां अध्ययन, अनुशासन और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता को विशेष महत्व दिया जाता था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा भारत में ही हुई, जहां बचपन से ही उन्हें प्राकृतिक परिवेश को करीब से देखने और समझने का अवसर मिला। यही अनुभव आगे चलकर उनके वैज्ञानिक जीवन की बुनियाद बने। उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने जीवविज्ञान और पारिस्थितिकी के क्षेत्र को चुना और गहन अध्ययन के माध्यम से इस विषय में विशेषज्ञता हासिल की। उनकी शैक्षणिक यात्रा केवल डिग्रियों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने विज्ञान को समाज और जमीन से जोड़ने का संकल्प उसी दौर में ले लिया था।

आगे चलकर वे बेंगलुरु स्थित इंडियन इंस्टीटयूट आफ साइंस (आईआईएससी) से जुड़े, जहां उन्होंने पारिस्थितिक विज्ञान केंद्र की स्थापना में अहम भूमिका निभाई। यह केंद्र भारत में आधुनिक पारिस्थितिकी अध्ययन का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बना और अनेक शोधकर्ताओं व छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा।

माधव गाडगिल का नाम पश्चिमी घाटों के साथ अविभाज्य रूप से जुड़ा है। उन्होंने पश्चिमी घाट पारिस्थितिकी विशेषज्ञ पैनल की अध्यक्षता की, जिसे गाडगिल आयोग के नाम से जाना जाता है। इस आयोग की रिपोर्ट ने पश्चिमी घाटों को संवेदनशील पारिस्थितिक क्षेत्रों में विभाजित करते हुए संरक्षण और विकास के बीच संतुलन का वैज्ञानिक और सामाजिक मॉडल प्रस्तुत किया।

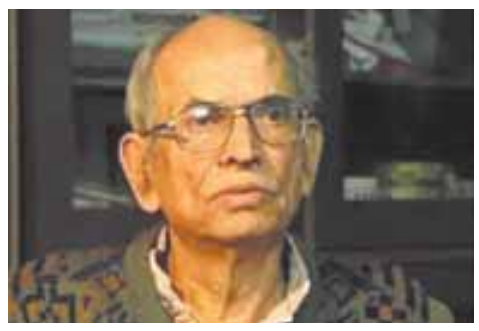

गाडगिल का मानना था कि स्थानीय समुदाय प्रकृति के सबसे बड़े संरक्षक होते हैं। इसलिए उन्होंने पर्यावरणीय निर्णयों में ग्राम सभाओं, आदिवासी समाज और स्थानीय लोगों की भागीदारी पर विशेष जोर दिया। उनकी यह सोच उस समय के प्रचलित केंद्रीकृत विकास मॉडल से अलग थी, इसी कारण उनकी रिपोर्ट पर व्यापक बहस और विरोध भी हुआ। बावजूद इसके, यह रिपोर्ट आज भी पर्यावरण नीति के संदर्भ में एक मार्गदर्शक दस्तावेज मानी जाती है।

माधव गाडगिल के योगदान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक मान्यता मिली। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2024 में उन्हें पश्चिमी घाटों के संरक्षण में उनके अतुलनीय योगदान के लिए 'चैंपियंस ऑफ द अर्थ' पुरस्कार से सम्मानित किया। यह संयुक्त राष्ट्र का सर्वोच्च पर्यावरण सम्मान है, जो केवल उन्हीं व्यक्तियों को दिया जाता है, जिनका कार्य वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण की दिशा तय करता है। इसके अतिरिक्त भी उन्हें अनेक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कारों और अकादमिक सम्मानों से नवाजा गया। ये सम्मान केवल उनकी वैज्ञानिक उपलब्धियों के लिए नहीं थे, बल्कि उस नैतिक साहस के लिए भी थे, जिसके साथ उन्होंने सत्ता, बाजार और पर्यावरण के जटिल रिश्तों पर सवाल उठाए। वे पुरस्कारों को व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की सामूहिक जिम्मेदारी के रूप में देखते थे।

एक शिक्षक के रूप में माधव गाडगिल ने पीढ़ियों को प्रभावित किया। उनके विद्यार्थी उन्हें केवल प्रोफेसर नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और प्रेरक के रूप में याद करते हैं। उन्होंने सरल भाषा में जटिल वैज्ञानिक अवधारणाओं को समझाने की कला विकसित की। उनकी पुस्तकें और लेख आज भी पर्यावरण अध्ययन से जुड़े विद्यार्थियों और कार्यकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण संदर्भ हैं।

वे मानते थे कि यदि विज्ञान आम आदमी की भाषा में नहीं उतरेगा, तो उसका सामाजिक प्रभाव सीमित रह जाएगा। इसी सोच के तहत उन्होंने लोकप्रिय लेखन, सार्वजनिक व्याख्यान और नागरिक संवाद को भी उतना ही महत्व दिया जितना अकादमिक शोध को।

धरती पुत्र के रूप में पहचाने जाने वाले माधव गाडगिल का जीवन हमें यह सिखाता है कि प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व कोई आदर्शवादी कल्पना नहीं, बल्कि व्यवहारिक आवश्यकता है। आज जब जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता ह्रास और संसाधनों के अंधाधुंध दोहन ने वैश्विक संकट पैदा कर दिया है, गाडगिल की सोच और भी प्रासंगिक हो जाती है।

वे भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके विचार, उनका संघर्ष और उनकी वैज्ञानिक ईमानदारी आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करती रहेगी। पश्चिमी घाटों की हरियाली, नदियों की धारा और स्थानीय समुदायों की आवाज़ में उनकी चेतना जीवित रहेगी। धरती के इस सच्चे पुत्र को विनम्र श्रद्धांजलि ! आपकी विरासत हमें प्रकृति के साथ न्यायपूर्ण और संतुलित भविष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती रहेगी।

कोर्ट के साए

सुरेश सौरभ

'अम्मां क्या सोच रही है? '

'बेटी सोच रही हूं, गांव में तेंदुआ आया है, कई लोगों को घायल कर चुका है। मार कर खा चुका है। अम्मां क्या तेंदुआ और शेर अलग-अलग होते हैं? ' 'एक ही समझो, बस खाली शक्लें बदलीं होती हैं उनकीं। '

'अम्माँ परसों एक लड़की का क्षत-विक्षत शव खेत में बरामद हुआ था। उसको भी क्या किसी तेंदुए ने मारा था। खाया था? ' 'बेटी उसे किसी तेंदुए ने तो नहीं, हाँ उससे बड़े एक राक्षस ने, उसे बड़ी बेरहमी से नोंच-नोंच कर खाया था। वह क्रूर राक्षस न महिलाओं छोड़ता है, न छोटी-छोटी बच्चियों को। वह सबको खा जाता है। निगल जाता है?। '

'अम्माँ वह राक्षस भी कभी पकड़ा जायेगा। जैसे तेंदुए और शेर पकड़ लिये जाते हैं। ' 'बेटी पकड़ा तो जाता है, पर उसे कभी नेता छुड़ा लेते हैं, कभी पुलिस वाले, कभी कोर्ट, हाई कोर्ट वाले। बेटी को जैसे सांप सूंघ गया, उसका सुंदर चेहरा भयाक्रांत, बेनूर हो गया।

व्यंग्य

नंदकिशोर बर्वे

लेखक व्यंग्यकार हैं।

जब एक बार जाँच बैठती है, तो मुश्किल से उठती है

अनुशासनहीनता और कार्य में लापरवाही के कारण बड़े साहब ने छोटे साहबों के खिलाफ़ जाँच बैठा दी। अब जाँच का तो आप जानते ही हैं कि जब एक बार वह बैठती है तो मुश्किल से उठती है। यहाँ उठने से आशय जाँच के पूरी होने से है। मतलब वह उठेगी तभी तो बात आगे बढ़ेगी। जाँच को उठने में गठिया बाई हो जाता है। और गठिया बाई के प्रति आम धारणा है कि वह लाइलाज होता है। आसानी से जाता नहीं है। सो जैसे ही बड़े साहब ने जाँच बिठाने घोषणा की। सभी सम्बन्धित छोटे साहबान निश्चिंत हो गए। क्योंकि वे भी अपने अनुभव से जानते हैं कि जाँच का बैठना सुरक्षित होने की गारंटी होती है। जैसे प्रेशर कुकर में जो सिटी होती है, वह कुकर को सुरक्षित उपयोग के लायक बनाती है। और आपातकाल के लिए उसमें सेफ्टी वाल्व होता है। वैसे ही किसी घटना से उपजा जनाक्रोश जब तक 'मेनेजेबल' होता है, तब तक उसका सामना आश्वासन रूपी सीटी से होता है। लेकिन जब जनाक्रोश अनियन्त्रित होने लगता है, तब सेफ्टी वाल्व रूपी जाँच बैठाई जाती है।

एक बार जाँच बैठने के बाद हर सवाल का जवाब एक ही होता है कि जाँच चल रही है और किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा। जो 'जांचेबल' होता है, वह जानता है कि राहत का ही दूसरा नाम जाँच होता है।

'जनाक्रोश बढ़ रहा है सर। अब क्या होगा?' एक जूनियर साहब चिंतित स्वर में बोला।

'तुम्हारे खिलाफ़ कितनी जाँच चल रही है?' सीनियर साहब ने बिना किसी चिंता के पूछा।

'यह तो पहली ही है सर। मैं बहुत चिंतित हूँ। पता

नहीं क्या होगा?' जूनियर बराबर चिंतित था।

'कुछ नहीं होगा। हमको देखो बीसियों जाँच का सामना कर चुके हैं। कुछ बिगड़ा क्या हमारा।' सीनियर साहब बोले।

'ऐसा कैसे सर!' जूनियर आश्चर्यपूर्वक बोला।

'देखो जाँच जो है, वह उलझे धागे के गुच्छे के समान होती है। अव्वल तो उसका सिरा ही ढूंढना मुश्किल, और मान लो कि सिरा मिल भी गया तो उस गुच्छे का सुलझाना उससे भी ज्यादा मुश्किल। बस इसी का नाम जाँच होता है। जिसने बैठाई वह बिठाकर अपने काम में लग गया। और जिसके खिलाफ़ बैठी है, वह अपनी नई पद स्थापना पर अपना काम जारी रखता है।' सीनियर साहब ने जाँच की पूरी थीसिस बता दी जूनियर को।

जिस प्राकृतिक न्याय के नाम पर जाँच बैठाई जाती है, वही सबसे अप्राकृतिक और कृत्रिम चीज़ है दोषियों को दण्डित करने के लिए। पीड़ित पक्ष अक्सर कमजोर लाचार और एकाकी ही साबित होता है, ऐसे मामलों में। वह भी अपनी रोजी-रोटी में इतना उलझा रहता है कि एक सीमा के बाद वह भी जाँच से तौबा कर लेता है। इस स्थिति के बाद वह चाहता है कि भगवान बचाए इस जाँच रूपी पिशाच से। लेकिन जाँच अपनी जगह चलती रहती है। और निरन्तर चलती रहती है। जाँच का चलते रहना यथास्थिति की पक्की गारंटी होती है।

'हमारे लिए जो जाँच चल रही है वह कब पूरी होगी सर।' एक पीड़ित ने पूछा। जो जाँच के प्रति ज़रूरत से ज्यादा आशावान था।

'भई देखो जाँच बिठाना और उसके चलते रहने तक ही हमारा काम होता है। बैठी हुई जाँच को हम किसी तरह से डिस्टर्ब नहीं करते। अगर हम उसको डिस्टर्ब करेंगे तो तुम्हीं को न्याय मिलने में देर होगी।' बड़े साहब ने जाँच का दर्शन पीड़ित को बता दिया।

'देर तो वैसे भी बहुत हो चुकी है सर। आप ही देखिए उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को कितना समय हो गया।' पीड़ित व्यथित हो गया।

'आपकी जल्दबाजी की हम इज़्ज़त करते हैं। पर जल्दबाजी में भी समय लगता है। फिर वह सुना नहीं कि जल्दी का काम शैतान का होता है।' बड़े साहब ने उसे फिर समझाया। वे तो 'शुद्ध हिन्दी' में समझाना चाहते थे पर मन मार गए।

'जल्दबाजी हो या देरी दोनों ही स्थिति में शैतान ही मजे में होता है सर। हमारे पास दोषी के खिलाफ़ सबूत ही सबूत थे। वे भी हम जाँच अधिकारी को दे चुके हैं।' वह अब तक आस का दामन पकड़े हुए था।

'पर अब तो तुम्हारे पास कुछ नहीं है ना। अब चुपचाप बैठने और इंतजार के अलावा तुम्हारे हाथ में कुछ नहीं है। जस्ट वेट एंड वाच। '

'पर सर...'

'पर वर कुछ नहीं। जाँच जारी है। और किसी भी दोषी को बख्शा नहीं जाएगा। फिर वह चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो।' बड़े साहब ने परम्परागत जबाव दिया। और चमचमाती गाड़ी में बैठकर फुर्र हो गए।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

जीवन भर संघर्षों से जूझता रहा कलाकार

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

अ सफलता ही सफलता की कुंजी है' इस बात से लगभग सभी लोग वाकिफ होंगे। कुछ लोग मानेंगे तो कुछ नहीं मानेंगे। इस मानने न मानने से इतर बस हमें अपने मानने पर भरोसा करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। हमें किसी भी परिणाम से इतर बस कार्य पर ध्यान देना चाहिए। हमें कोई भी कार्य खुद से करके उसके अच्छाई एवं बुराई पर विचार करना चाहिए। कलाकार विंसेंट वॉन गॉग असफलता से सफलता की ओर बढ़ने वाला कलाकार हुआ। उपदेश देने से पूर्व श्रोताओं के दुःख दर्द को महसूस करते हुए आगे बढ़ा। जीवनयापन हेतु तमाम संघर्षों के बावजूद निराश ही होता रहा पर आगे बढ़ता रहा। पागल बेवकूफ का तमगा भी मिला, उसी को लिए लगातार आगे बढ़ने के प्रयास में लगा रहा।

25 वर्ष तक लगभग चार से पांच कामों में असफल होने के बाद विंसेंट को बोरिनोज़ के चर्च में मज़दूरों को उपदेश सुनाने का मौका मिल गया साथ में काम भर का वेतन भी। पादरी बन गया था, अस्थाई नियुक्ति मिली थी। असफलता यहां भी साथ नहीं छोड़ी। कड़कड़ाती ठंड में देंह ऐंठ-ऐंठ जा रही थी जिसे गर्म रखने हेतु कोयले की आवश्यकता थी। इंतजाम कैसे होगा? परेशान था वॉन गॉग, जिस हेतु उसे कोयले के पहाड़ी तक जाना था, वो गया भी। काम भर का कोयला मिल तो गया पर वो वहां के संघर्ष से वाकिफ भी हो गया। लाख छुड़ाने के बावजूद भी कोयले की कुछ काली परतें चेहरे पर जमीं रहीं। ऐसी अवस्था में ही उपदेश देना हुआ था पहली बार वॉन गॉग को। सुनने वाले भी दीन, हीन, निरीह, काले कोयले से सने लोग थे। कोयले वाला उपदेशक उन्हें अपने ही बीच का लगा। लोगों का विश्वास वॉन गॉग पर बैठ गया।

ईश्वर, संघर्ष और जीवन जैसे तमाम गूढ़ रहस्यों को बड़े ही साधारण तरीके से समझाने में कामयाब हो गया था वॉन गॉग। बिल्कुल ही प्रवाह के साथ अपने शब्दों को रखते हुए लोगों को खुद से जोड़ पाने में भी सफल हो गया था पर दूसरों को ज्ञान बांटते-बांटते जल्द ही खुद भी गहरे अंधेरे में कहीं खो गया था। खोह में खोये कोयले की भांति। हीरा भी तो ऐसे ही होता है। किसी ने कहा कि अभी आप पूरे बोरिनोज़ को सही से जान नहीं पाये हैं, यहां के लोगों को ज्ञान से ज्यादा रोटी की आवश्यकता है, शरीर के न भरने वाले खोह को पाटने हेतु आलू की आवश्यकता है, दो जून खाने को कुछ मिल सके उसकी आवश्यकता है। ज्ञान बांटने निकले वॉन गॉग के मन में, उपदेशक को भी श्रोताओं जैसा ही होना चाहिए, जैसा भाव था। कोयले के खदान में उतरने के निश्चय के साथ वो आगे बढ़ा। जिनको उपदेश देना है उनके दुखों को पहले समझना होगा। बीती रात को जबरदस्त ठिठुरन रही, बाहर निकलना ही मृत्यु सा भयावह लग रहा था बावजूद इसके लोग भोर में ही ठिठुरते सिकुड़ते अपने काम पर जा रहे थे। वॉन गॉग भी उतर रहा था। दुख पसर कर वॉन गॉग के कलेजे तक उतर गया था। ढेबरी के रोशनी में लगातार खदान के नीचे उतरते हुए कई दफा सांसों के उखड़ जाने के एहसास से कांप उठना हुआ पर हार नहीं माना।

वो निरंतर नीचे उतरता गया। मृत्यु सिर पर खड़ी दिखाई पड़ रही थी पर उसका उतरना जारी था। मजदूरों को देखकर हौंसला मिलता रहा। मजदूर काले पसीने से नहाए हुए जान पड़ रहे थे। जमीन काली खेती सी जान पड़ रही थी। थूक भी काली आने लगी थी। दूसरों के चेहरे को देखकर वॉन गॉग खुद के चेहरे का अंदाजा लगा चुका था। संकरी बिल्कुल ही संकरी खोह से उतरते हुए अब वो वाकई बोरिनोज़ को जान पा रहा था।

छोटे बिल्कुल छोटे बच्चों को अपने उम्र से पहले बड़े होते देखना और औकात से कई गुना अधिक कष्टों वाले काम करते देखते हुए दिल पसीज गया उस पसीझते हुए दलदल में। खदान में कमियों का अंबार था, खदान के कभी भी बैठ जाने का खतरा भी था बावजूद इसके भी लोग निरंतर खट रहे थे, पेट और बाल-बच्चों के खातिर।

खदान की दशा देख

अंदर तक सिहर उठा वॉन गॉग। किसी तरीके से जिंदा बाहर आने के बाद एकदम बदलाव सा हो गया था उसके व्यवहार में। छोटे बच्चों के कष्टों को देखकर भी वो तड़प उठ रहा था। खदान में मजदूरों की दशा देखकर उनके बीमार एवं बिलखते बच्चों से मिलने के बाद एकदम से तड़प उठा वॉन गॉग। रहन-सहन बिल्कुल ही बोरिनोज़ वालों की तरह एकदम गरीबी में होना चाहिए फलतः रहने का स्थान भी बदल लिया। बिल्कुल ही घटिया पूरे मुहल्ले के लोगों से भी घटिया जगह लेकर रहने लगा ताकि वहां रहने वाले लोगों को वो अपने बीच का लग सके। खदान के मजदूरों की मजबूरी ठेकेदार तक भी पहुंचाया पर उनकी अपनी मजबूरी मुंह बाये खड़ी थी। बिल्कुल ही आपा खो बैठा था वॉन गॉग। अब तक कलाकार बनने की बात नहीं थी। अभी तक वो एक अच्छा इंसान बनना चाह रहा था पर उसके साथ उसका चाहा कभी नहीं हुआ।

अपने लिए बस जरूरत के कपड़े रखते हुए उसने बाकी बचे कपड़ों को ठिठुरन से कांपते जरुरत मंदो में बांट दिया। दिन भर कोयला बीनता, बीन कर ठंढ से तड़पते बच्चों को गर्म करने हेतु भट्ठियों में जलाने के लिए उनके परिजनों को दे देता और खुद सिकुड़ते हुए जीता। अपनी चारपाई भी बिमार बच्चे को देकर खुद घास पर सोने लगा। वॉन गॉग अपने पिता एवं भाई थियो के निगाह में एक सफल इंसान तो नहीं बन पा रहा था पर खुद के नजर में दूसरों के काम आने वाला एक अच्छा इंसान बन गया था। दर्द के अथाह सागर में गोंता लगा रहा था वॉन गॉग पर खुद को बचाने के स्थान पर दूसरों को उभारते हुए खुद और भी गहरा डूबता जा रहा था। अब तक मिले अपने वेतन को भी इन्हीं गरीबों के देखरेख में लगाता रहा। खुद किसी तरीके से काम भर का खा पा रहा था।

एक दिन कोयला बीन ही रहा था कि अंदर से बाहर को बेतरतीब भागती हुई बहुत सारी आकृतियां उसको दीख पड़ीं। अभी तो निकलने का समय भी नहीं हुआ है। ओह! जरूर कोई दुर्घटना हुई है। कई लोगों के न रहने की खबर आई थी। थका हारा वॉन गॉग पेट पकड़ कर वहीं बैठ गया था। काश कि एक दिन की छुट्टी करके सब कुछ पहले ही सही करवा दिया गया होता। एक दिन लोग पानी पीकर ही रह गये होते इतनी जानें तो नहीं जातीं। दुर्घटना के बाद वॉन गॉग का वेतन गांव भर में फिर खप गया। दर्द से तड़पते को दिलाशा देते हुए वॉन गॉग जी भर कर रोया था। उन सभी के कष्टों को दूर करने में लगा हुआ था। बोरिनोज़ का ही होकर रह गया था वॉन गॉग। बोरिनोज़ वालों से इस तरह घुल मिल कर रहना उसके अधिकारियों को बहुत बुरा लगा, पादरी पद को धक्का देने वाला लगा फलतः अधिकारियों द्वारा जल्दी ही उसे पादरी पद से हटा दिया गया। एक बार फिर वॉन गॉग बिना काम के हो गया पर वो अभी भी बोरिनोज़ वालों की सहायता करता रहा अपने सामर्थ्य भर। खाना-पीना भी धीरे-धीरे कम होता गया। बीमारियों से घिरता चला गया। आंखें धंसती जा रहीं थीं। हद से कहीं ज्यादा कमजोर हो गया था वो। समय से पहले ही बूढ़ा दिखने लगा था। धीरे-धीरे वॉन गॉग मजदूरों के काम का भी नहीं रहा। दिन रात भर आसमान निहारता रहता था। कुछ भी समझने में खुद को असमर्थ पा रहा था कि उसने खुद को किताबों डुबो देना तय किया। लगातार पढ़ते-पढ़ते जल्दी ही यहां से भी ऊब गया बिना मंजिल के राही की भांति घूमने निकल गया। घूमते हुए दूर बहुत दूर निकल गया। थक कर दीवार से सटे जगह पर वह बैठ गया। लगातार न समझ सकने वाली बातें सोचता रहा जबकि हाथ वहां खड़े एक बूढ़े व्यक्ति का चित्र बनाने में लगा हुआ था। चित्र तो बहुत अच्छा नहीं था पर भाव डूब कर बनाए कलाकारों जैसा ही था। कुछ समय बाद तो वॉन गॉग दिन-दिन भर खेतों में ही बैठा रहता था। पहली बार वहां के लोग किसानों के जैसे घंटों खेत में बैठ कर चित्रकारी करते किसी को देख रहे थे। चित्र गूगल से साभार।

पत्रकारिता के खट्टे - मीठे अनुभवों की पोटली

पुस्तक चर्चा

डॉ. लोकेन्द्र सिंह

समीक्षक

अ ब मैं बोलूंगी...' यह पुस्तक वरिष्ठ पत्रकार स्मृति आदित्य की यादों की पोटली है, जिसमें कुछ खट्टे तो कुछ मीठे संस्मरण शामिल हैं। 15 वर्षों से अधिक फीचर संपादक के रूप में और स्वतंत्र लेखन करते हुए, उन्हें जो अनुभव आए, उन सबको वे अपनी डायरी में दर्ज करती करती गईं। इनमें अखबार के दफ्तर की राजनीति के किस्से, साहित्य चोरी के प्रसंग और अपने मन की अनुभूतियों का ऐसा ब्यौरा दर्ज है, जो सबको सीख देता है। यह पुस्तक मुख्यतः स्मृति आदित्य के उस समय की मनःस्थिति को सामने लाती है, जब उनको पता चलता है कि 15 साल से अधिक की ऑनलाइन पत्रकारिता की उनकी नौकरी अब जा रही है। यह स्थिति किसी को भी विचलित कर सकती है कि जब आपको पता न हो कि आगे क्या करना है? लेकिन खुद पर विश्वास हो तब आप ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में भी स्वयं को संभाल लेते हो। जुलाई से दिसंबर तक लिखी डायरी में उन्होंने पत्रकारिता की अपनी शुरुआत, उससे जुड़े सपनों एवं वहाँ की कठिनाइयों को इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि पढ़कर ऐसा लगता है- यह तो मेरी ही कहानी है। इस पुस्तक को 'शिवना कृति सम्मान-2025' भी प्राप्त हुआ है।

डायरी लिखना क्यों जरूरी है? इस प्रश्न के साथ ही पुस्तक के पहले अध्याय की शुरुआत होती है। इसका बढ़िया दार्शनिक उत्तर उन्होंने दिया है- 'लिखना जरूरी है ताकि मन उड़ सके अपने मुताबिक '। दरअसल, लिख देने से मन खाली हो जाता है, अच्छे विचारों के लिए। और जब अच्छे प्रसंग लिख देते हैं, तो मन रचनात्मकता से भरकर प्रसन्न हो उठता है। इसलिए लिखना जरूरी है। प्रतिकूल परिस्थिति में जब हम अपने मन से बेकार की बातों को खाली करके, अपनी रुचि को जीने के लिए दो कदम बढ़ाते हैं, तो डिप्रेशन में जाने से भी बच जाते हैं।

लेखिका ने उन कठिन अवसरों को भी याद किया है, जब हमारे काम पर कोई अपना नाम चिपका देता है। हम मेहनत से समाचारपत्र-पत्रिका के पृष्ठ तैयार करते हैं और अचानक से कोई

विज्ञापन आ जाता है, तब मन को मारकर पठनीय सामग्री को विज्ञापन के साथ 'एडजस्ट' करना होता है। हालांकि, यह काम का हिस्सा है लेकिन कष्ट तो होता है। जैसे हम आँगन में रंगोली बनाएं और खुद ही किसी के दबाव में उसे बिगाड़ दें। एक-दो पृष्ठों पर उन्होंने समाचारपत्रों में आए 'कॉरपोरेट कल्चर' के गंभीर खतरों की ओर भी संकेत किया है। कैसे पत्रकारिता के आनंद को हमने काम के अत्यधिक दबाव में समाप्त कर दिया है। संपादकीय कक्ष में फिर से उस बौद्धिक वातावरण को अतीत से खींचकर लाने की जरूरत है, जो हमें मानसिक थकान नहीं देता था अपितु हमारी बौद्धिक चेतना को समृद्ध करता था। बहुत ही सुंदर ढंग से उन्होंने लिखा है- 'दीमक लग रही है दिगामों में... एक जैसा वर्क कल्चर खा रहा है उन्हें... या तो समय पर बाहर ले जाकर धूप दिखायी जाए या धूप के टुकड़े भीतर लेकर आने का साहस किया जाए... '।

अपने इन संस्मरणों में उन्होंने 'साहित्य चोरी' की मानसिकता को भी उजागर किया है। हमारे आसपास कई लोग हैं, जिनको लिखना तो नहीं आता लेकिन लेखक बनने की दिली इच्छा रहती है। ये लोग बड़ी बेशर्मी से दूसरों के लेख उठाकर अपने नाम से प्रकाशित करा लेते हैं। अकसर हम लोग ऐसे लोगों को नजरअंदाज कर देते हैं। लेकिन स्मृति आदित्य ने तो ठान रखा था कि बहुत हुआ, ऐसे लोगों के विरुद्ध 'अब मैं बोलूंगी...'। बहुत रोचक प्रसंग हैं, पढ़कर आपको आनंद आएगा और आश्चर्य भी होगा। 'लाड़ली मीडिया अवार्ड' पुरस्कृत अपनी फीचर स्टोरी को भी उन्होंने पुस्तक में शामिल किया है, जिनको अवश्य ही पढ़ा जाना चाहिए।

अपनी पुस्तक 'अब मैं बोलूंगी...' में लेखिका स्मृति आदित्य ने केवल स्याह पक्ष को ही नहीं दिखाया है अपितु पत्रकारिता के उजले पक्ष की बात भी की है। उनके कई प्रसंग पत्रकारिता एवं पत्रकारों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को संवेदनशील बनाता है। डायरी को खत्म करते समय वे लिखती भी हैं कि 'मुझे इस किताब के माध्यम से न तो किसी पर दोषारोपण करना है न ही किसी मालिक या संपादक के खिलाफ मोर्चा खोलना है... मैं हर हाल में खुश रहने वाली लड़की बस इतना चाहती हूँ कि इस पेशे की नैतिकता को यथासंभव बचाया जाए ताकि आने वाली पत्रकारीय नस्ल और फसल हरी रहे, लहलहाती रहे... '। यह पुस्तक पत्रकारिता में शीर्ष पदों पर बैठे महानुभावों के साथ इस पेशे से जुड़े सभी लोगों को पढ़नी चाहिए।

पुस्तक : अब मैं बोलूँगी...
लेखक : स्मृति आदित्य
मूल्य : 150 रुपये
पृष्ठ : 78
प्रकाशक : शिवना प्रकाशन, सीहोर, मध्यप्रदेश

इक्कीस : धर्मेन्द्र के विलक्षण अभिनय से बनी यादगार फिल्म

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

भा रत के सबसे युवा परमवीर चक्र विजेता थे -अरुण क्षेत्रपाल। केवल इक्कीस वर्ष की उम्र में उन्होंने देश के लिये आत्मोसर्ग किया और उनके जीवन वृत्त पर ही केन्द्रित है फिल्म - 'इक्कीस'।

यह बॉलीवुड के ही-मेन धर्मेन्द्र अभिनीत अन्तिम फिल्म है और इस कोण से भी इस फिल्म की काफी समीक्षाएं लिखी जा रही हैं मगर मेरा मानना है कि धर्मेन्द्र की यह फिल्म निरपेक्ष रुप में भी एक बेहतरीन फिल्म है और इसका सारा श्रेय फिल्म की देश के लिये बलिदान होने वाले अरुण क्षेत्रपाल के जीवन वृत्त और फिल्म के सशक्त अभिनय पक्ष को देना चाहिये ।

निर्देशक श्रीराम राघवन के निर्देशन में बनी फिल्म- बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेता र धर्मेंद्र की आखिरी फिल्म है। इस फिल्म में ब्रिगेडियर एम.एल.क्षेत्रपाल की भूमिका में उन्होंने अपनी विलक्षण अभिनय क्षमता का प्रदर्शन किया है। अमिताभ बच्चन के नातीअगस्त्य नंदा नेटफ्लिक्स फिल्म 'द आर्चीज' से एक्टिंग डेब्यू करने के बाद वे पहली बार इस फिल्म से बड़े परदे पर आये हैं। उनका अभिनय और भाव सम्प्रेषण काफी दमदार है, फिल्म में उन्होंने युवा अरुण क्षेत्रपाल की केन्द्रीय भूमिका निभाकर अपने अभिनय का एक नया प्रतिमान गढ़ा है । अक्षय कुमार की भतीजी सिमर भाटिया का किरण की भूमिका में डेब्यू भी अच्छा रहा ।अगस्त्य संग उनकी जोड़ी भी अच्छी लगी। उन्हें बहुत छोटा रोल मिला है और उसे उन्होंने ठीक निभा लिया है।

नवासी साल के धर्मेंद्र को आखिरी पर परदे पर देखना बेहद इमोशनल एक्सपीरिएंस है। लेकिन उन्हें देख आपको यह खुशी भी होगी कि इतनी उम्र में भी उन्होंने बढ़िया परफॉरमेंस दी है। स्क्रीन पर धर्मेंद्र के साथ ज्यादातर वक्त जयदीप अहलावत हैं

ब्रिगेडियर नासिर की भूमिका में एक बड़े सीनियर एक्टर के साथ स्क्रीन स्पेस शेयर करना और अपनी छाप छोड़ना बड़ी बात है। जयदीप अहलावत ने भी वही किया है। अपने सीन के हर फ्रेम में धर्मेंद्र विलक्षण हैं और उन्हीं की बरअक्स जयदीप भी हैं। अपने सीने में एक बात दबाए नासिर के अन्दर की कशमकश को उन्होंने बहुत ही बढ़िया तरीके से प्रस्तुत किया है।

'अँधाधुन्द' जैसी बेहतरीन फिल्म बना चुके श्रीराम राघवन ने पहली बार कोई वॉर फिल्म बनाई है । 'इक्कीस' उनकी सबसे बढ़िया फिल्म तो नहीं है, लेकिन उनकी मेहनत इसमें साफ देखी जा सकती है। फिल्म की कहानी बीच-बीच में डगमगाती है, लेकिन आपका हाथ नहीं छोड़ती। अरुण खेत्रपाल की छोटी-सी जिन्दगी के कई

पहलुओं को आप देखने हैं और गर्व महसूस करते हैं। मूवी का सेकेंड हाफ बढ़िया है, क्योंकि ज्यादातर एक्शन आपको उसी में देखने को मिलती है। वॉर सीन्स देखकर मजा आता है। टैंक चलाना सीखना, जंग में उनका इस्तेमाल, लैंड माइन से भरी नदी पार करने से लेकर दूसरे देश में धावा बोलने तक, कई बढ़िया दृष्बन्ध आपका दिल जीत सकते हैं । साथ ही कई आपके रोंगटे भी खड़े करते हैं।

फिल्म में दो कैमियो हैं। एक सीनियर एक्टर असरानी और दूसरा दीपक डोबरियाल का । दीपक का कैमियो ठीकठाक रहा। असरानी भी इस साल दुनिया को अलविदा कह गए हैं । ऐसे में उन्हें और धर्मेंद्र को साथ देखना काफी इमोशनल था और जरा-से सीन में ही असरानी ने दिल खुश कर दिया।

और अब एक खास उल्लेख। फिल्म का एक दृष्य है, जब ब्रिगेडियर नासिर बने जयदीप, ब्रिगेडियर एम एल क्षेत्रपाल बने धर्मेन्द्र उनका पिण्ड लेकर सरगोधा जाते हैं। यहाँ धर्मेंद्र की कविता- ''आज भी जी करता है, पिंड अपने नु जानवां 'आप सुनेंगे, ये आपकी आँखों में आँसू लाएगी.श। ये कविता धर्मेंद्र ने खुद फिल्म के लिए लिखी थी। ये उनकी जुबान के साथ-साथ दिल से भी निकली है, क्योंकि सभी जानते हैं कि उन्हें अपने गाँव से बहुत प्यार था।

कृष्ण-भीष्म सार्थक संवाद

सोशल मीडिया

डॉ. विद्यानंद त्रिपाठी

नेफ्रोलॉजी विशेषज्ञ

भीष्म कृष्ण से: युधिष्ठिर का राज्याभिषेक तो करा चुके केशव पर बुजुर्गों से रिक्त हो चुके राजप्रासाद में उन्हें अब सबसे अधिक तुम्हारी आवश्यकता है. कृष्ण चुप रहे.

भीष्म ने पुनः कहा : कुछ पूछूँ केशव. धरा छोड़ने के पूर्व मेरे भ्रम समाप्त हो जाएं. तुम तो ईश्वर हो.

कृष्ण ने बीच में ही टोका : नहीं, मैं ईश्वर नहीं. मैं तो आपका पौत्र हूँ पितामह.

भीष्म उस घोर पीड़ा में भी हँस पड़े : अपने जीवन का स्वयं कभी आकलन नहीं कर पाया कि अच्छा रहा या बुरा. पर अब इस धरा से जा रहा हूँ कन्हैया, अब तो ठगना छोड़ दे.

कृष्ण पास सरक आये और हाथ पकड़ कर बोले : कहिये पितामह.

भीष्म बोले : एक बात बताओ. इस युद्ध में जो हुआ वो ठीक था क्या?

कृष्ण : किसकी ओर से पितामह?

भीष्म : पांडवों की ओर से. कौरवों के कृत्यों पर चर्चा का अब कोई अर्थ नहीं. पर क्या पांडवों की ओर से जो हुआ वो सही था. आचार्य द्रोण, दुर्योधन, दुःशासन, द्रोणाचार्य आदि का अनैतिक वध. ठीक था क्या.

इसका उत्तर मैं कैसे दे सकता हूँ. उत्तर उन्हें देना चाहिए जिन्होंने यह किया. मैं तो युद्ध में कहीं था ही नहीं.

अभी भी छलना नहीं छोड़ोगे कृष्ण. विश्व भले कुछ भी कहता रहे पर मैं जानता हूँ कि यह केवल तुम्हारी विजय है. तो उत्तर तुम्हीं से पूछूंगा.

तो सुनिए पितामह. कुछ अनैतिक नहीं हुआ. वही हुआ जो हो होना चाहिए.

यह मर्यादा पुरुष राम का अवतार कह रहा है. छल तो किसी युग में हमारे सनातन संस्कारों का अंग नहीं रहा, फिर यह उचित कैसे गया.

इतिहास से शिक्षा ली जाती है पितामह. पर निर्णय वर्तमान की परिस्थितियों के आधार पर लेना पड़ता है.

हर युग अपने तर्कों और आवश्यकता के आधार पर नायक चुनता है. राम त्रेता के नायक थे, मेरे भाग में द्वापर आया. दोनों

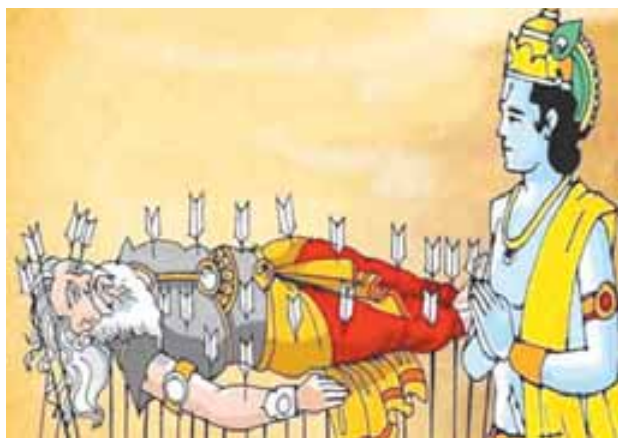

का निर्णय एक सा नहीं हो सकता.

भीष्म : नहीं समझ पाया. तनिक समझाओ.

कृष्ण : राम और कृष्ण की परिस्थितियों में बहुत अंतर है. त्रेता में खलनायक भी रावण जैसा शिवभक्त होता था, जिसके परिवार में भी संत हुआ करते थे. खलनायक भी धर्म का ज्ञान रखता था. इसलिए राम ने उनके साथ छल नहीं किया. किंतु मेरे युग में कंस जैसे घोर पापी आये हैं. उनकी समाप्ति के लिए छल उचित है. पाप का अंत आवश्यक है वह चाहे जैसे से हो.

भीष्म बोले : तो क्या तुम्हारे निर्णयों से गलत परम्पराएं नहीं प्रारम्भ होंगी. क्या भविष्य इन छलों का अनुसरण नहीं करेगा.

कृष्ण : भविष्य इससे अधिक नकारात्मक आ रहा है. कलियुग में तो इतने से भी काम नहीं चलेगा. वहाँ मनुष्य को कृष्ण से भी अधिक कठोर होना होगा. नहीं तो धर्म समाप्त हो जाएगा.

जब क्रूर अनैतिक शक्तियाँ सत्य एवं धर्म का समूल नाश करने के लिए आक्रमण कर रही हों, तो नैतिकता अर्थहीन हो जाती है. तब महत्वपूर्ण होती है केवल धर्म की विजय.

भीष्म : क्या धर्म का भी नाश हो सकता है. और यदि धर्म का नाश होना ही है तो क्या मनुष्य इसे रोक सकता है.

कृष्ण : सब कुछ ईश्वर के भरोसे छोड़ कर बैठना मूर्खता होती है. ईश्वर स्वयं कुछ नहीं करता. केवल मार्ग दर्शन करता है. सब मनुष्य को ही स्वयं करना पड़ता है. आप मुझे ईश्वर कहते हैं न. तो बताइए मैंने स्वयं इस युद्ध में कुछ किया क्या. सब पांडवों को ही करना पड़ा. यही प्रकृति का संविधान है. युद्ध के प्रथम दिन यही परम सत्य तो कहा था मैंने अर्जुन से.

भीष्म अब संतुष्ट लग रहे थे. उनकी आँखें बन्द होने लगीं थी. उन्होंने कहा - चलो कृष्ण ! यह इस धरा पर अंतिम रात्रि है. कल सम्भवतः चले जाना हो. अपने इस अभागे भक्त पर कृपा करना.

कृष्ण ने मन मे ही कुछ कहा और भीष्म को प्रणाम कर लौट चले, पर युद्धभूमि के उस डरावने अंधकार में भविष्य को जीवन का सबसे बड़ा सूत्र मिल चुका था.

जब अनैतिक क्रूर शक्तियाँ सत्य और धर्म का विनाश करने के लिए आक्रमण कर रही हों, तो नैतिकता का पाठ आत्मघाती होता है. 'धर्मो रक्षति रक्षितः' आप धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म आपकी रक्षा करें।

'गृहायुद्ध': सरकारी आवास आवंटन की तथा- कथा

शारदा दयाल श्रीवास्तव

उपन्यास 'गृहायुद्ध' सर्वप्रथम अपने अनूठे नाम की ओर ध्यान आकर्षित करता है,ि जसका अर्थ तमाम शब्दकोश खंगालने पर भी नहीं मिलता है। लगभग आधी पुस्तक पढ़ने पर 'गृहायद्ध' का तात्पर्य समझ आता है,ि जसकी चचा भी बाद में करेंगे। पुस्तक का मुखपृष्ठ आकर्षक है और उपन्यास की कथावस्तु के अनुरूप हैि जसमें अनेक प्रकार के आवासों के साथ आवेदन लिये हुए आवेदक की याचक सी भाव-भंगिमा व कुर्सी पर बैठे किसी सरकारी नुमाइंदे के रौबदार भाव, उपन्यास के प्लॉट, पात्र, परिवेश व संदेश का अनुमान लगाने में पूरी तरह से सफल होते हैं। उपन्यासकार स्वयं एक प्रथम श्रेणी शासकीय अधिकारी रहे हैं और जैसा कि उन्होने पुस्तक के आत्मकथ्य में लिखा है- आवास आवंटन के खेल के भुक्तभोगी भी रहे हैं। शायद इसलिए वे शासकीय सेवायुक्तों के आवास आवंटन की अंदरूनी परत को उधेड़ते हुए व्यवस्था के बारीक छद्रों के आर-पार देखने में सक्षम हो सके और सत्ताइस अलग- अलग घटनाओं को समेट कर एक रोचक उपन्यास में ढालने में सफल हो सके । यह पुस्तक लेखक की गहन अवलोकन दृष्टि का प्रमाण है।

लेखक सुदर्शनजी पहले भी अपना व्यंग्य संग्रह, 'अगले जनम मोहे कुत्ता कीजो' का प्रकाशन कर चुके हैं जो कुत्ते पर ही लगभग पैंतीस अलग-अलग व्यंग्य लेखों का संग्रह है। प्रस्तुत कृति एक व्यंग्य उपन्यास है जो अपने पात्रों, घटनाओं व शब्दों के माध्यम से व्यवस्था पर करारी चोट करता है। उपन्यासकार स्वयं जिस व्यवस्था का हिस्सा रहा हो उसी व्यवस्था की बखिया उधेड़ने की कुशलता बड़े साहस का काम है। सभी पात्र, घटनाएं व संवाद वास्तविक रूप से अनुभूत किए प्रतीत होते हैं जिनका चित्रण बड़ी बारीकी से किया गया है। सभी के तार आवास आवंटन समस्या से जुड़े हैं। हर घटना संकेत देती है कि सरकारी आवास उसमें निवासरत व्यक्ति को सिर्फ एक सुरक्षात्मक छत देकर निजता की रक्षा ही नहीं करता है बिल्क वह उसके अफसरी रुतबे, प्रतिष्ठा एवं गुरूर को भी सुरक्षा प्रदान करता है। और इस बहुआयामी लाभ को हासिल करने के लिये साँठ-गाँठ, जुगाड़ों, हिकमतों का जो कुचक्र चलता है वह इस उपन्यास में बड़ी कुशलता से दखाया गया है। उपन्यासकार अपनी रचना का मूल संदेश देने में पूर्णतः सफल हैं कि स्थानान्तरण पर आए आवासहीन शासकीय सेवायुक्तों व उनके परिवारजनों को आवास सुविधा देने वाले सरकारी आवास किस तरह पक्षपात, अनाधिकृत लाभ, और शक्तियों के दुरुपयोग का साधन बन गए हैं। पहली घटना 'फील्ड पदस्थापना' में कलेक्टर

सुरेन्द्र विक्रम सिंह से शुरू होती है जो सर्किट हाउस के वीआईपी सुईट से शुरू होकर उनके ट्रांसफर पर अपमानजनक ढंग से उनका बँगला खाली करवाने पर खतम होती है। यहाँ भी उपन्यासकार के अंदर बैठा व्यंग्यकार नकलकर लिखता है,' भारतीय रेल यात्रियों को हिलाने का सामर्थ्य तो खूब रखती है। कभी पैक्ड खाने में कॉकरोच निकलने से, तो कभी आरक्षित बर्थ पर पूर्व से ही किसी के जमे होने, तो कभी इसकी लेट लतीफी, तो कभी तत्काल कोटे की बर्थ के पलक झपकते में गायब होने जैसे किसी भी कारण से यात्री को वह हलाती रहती है।' जनसुनवाई की घटना भी मजेदार है, जब आवेदक 'अभागीलाल' अपना विवाह करवाने की गुहार शासन से लगाता है। ऐसे आवेदक पात्र का नामकरण 'अभागीलाल' रखा जाना भी एक कटाक्षपूर्ण प्रभाव पैदा करता है। यहाँ एक ओर कलेक्टर की निजी सुख-सुविधाओं हेतु सरकारी मदों से फण्ड की गुंजाइश ढूँढ़ता अमला, राजनीतिक लाभ हेतु कलेक्टर पर दबाव बनाती शक्तियां और नियमपूवक चल कर ऊपरी शक्तियों से ताल-मेल न बैठाने पर कलेक्टरी से हाथ धोते सुरेन्द्र विक्रम का चित्रण भी बड़े स्वाभाविक ढ़ँग से हुआ है। उपन्यास का चौथा घटनाक्रम या कहानी 'मिश्री की डली' राजधानी का वह शक्ति केन्द्र है,जिसे लेखक प्रायःद्वीप कहते हैं। राजधानी में रहने वाला बड़ी आसानी से यह समझ सकता है कि 'मिश्री की डली' का संकेत किस ओर है,जिसका इशारा लेखक ने कई जगहों पर कर दया है। ' मैडम कोहली' का वृतांत भी बड़ा रोचक है जो सरकारी आवास आवंटित होने के बावजूद अपने भव्य निजी आवास में रहती हैं और सरकारी आवास को किराये पर देना एक सेवाकार्य मानती हैं। इस वृतांत के बीच ही लेखक बड़ी दार्शनिक बात करते हैं,' एक्वेरियम की मछली को देखकर आम आदमी की जिंदगी याद आ जाती है। वह भी तो अपनी सम्पूर्ण जिंदगी घर-गृहस्थी नौकरी-धंधे के काम में ऐसे ही छोटी आय के दायरे में, छोटी सी दुनिया में, यहाँ से वहाँ, वो भी खुश-खुश उतराता सा रहता है। अंत में उसे कुछ खास हासिल नहीं होता है। वह अपनी दिनचर्या को ही अपना जीवन समझने लगता है।' 'नई कहानी' में वे मजाकिया तरीके से कहते हैं, भोपाल की गालियाँ वैसे भी जग प्रसिहद्ध हैं। इनमें बड़े अच्छे फ्यूजन प्रयोग हैं। पुल्लिंग व स्त्रीलिंग या पुल्लिंग का स्त्रीलिंग या फिर पुल्लिंग का आ जाना या इसका उल्टा।' ऐसी जगहों पर श्रीलाल शुक्ल के ' रागदरबारी' की याद आना स्वाभावक ही है। 'चाईनीज वाला' में एक जोरदार पंच है,' दफ्तर में ऊँघने वाला भी यातायात में अत्यंत चेतन व हड़बड़ी में रहता है।' अन्य अध्याय 'जो हो जाए कम है' में आपसी वार्तालाप में पाठक को 'चाईनीज वाला' में एक जोरदार पंच वाक्य है,' दफ्तर में ऊँघने वाला भी यातायात में अत्यंत चेतन व हड़बड़ी में रहता है।' अन्य अध्याय ' जो हो जाए कम है' में पाठक को पुस्तक के नाम ' गृहायुद्ध' का तात्पर्य समझ आता है जो आवासीय आवंटन का संघर्ष है। 'गृहायुद्ध' नवीन शब्द सृजन है, जो लेखक की सृजनात्मक योग्यता को दशाता है। मत्तल बाबा का किरदार भी मनोरंजक है। 'जल-डली' भी राजधानी की उस सम्भ्रांत व उत्कृष्ट कॉलोनी के अभिजात्य वर्ग पर कटाक्ष है, जहाँ के ओवरहैड टैंक से बर्बाद होता पानी वहां की पहचान है।' लोक संकम' की कहानी भी ऐसी ही जहाँ विभागीय अधकारी मूलभूत जरूरतों को छोड़कर गैरजरूरी कामों/ साज-सज्जा में धन का अपव्यय करते दिखते हैं। अनेक शब्द समूह बड़े ही प्रभावी हैं जैसे- मुस्कान की राशनिंग, आवास लीला आदि। भाषा व्यंजनात्मक व संवाद सरल है और आवश्यकतानुसार स्थानीय/बाहरी बोली का रोचक प्रयोग किया गया है। मुद्रण में अनेक स्थानों पर प्रूफ रीडिंग की त्रुटियां दिखाई देती हैं, पर धाराप्रवाह पठन में बाधक नहीं हैं। पुस्तक अत्यंत रोचक व पठनीय है।

पुस्तक- गृहायुद्ध
लेखक- श्री सुदशन सोनी
प्रकाशक- आईसेक्ट पब्लिकेशन

अंतर्राष्ट्रीय विश्व तथ्य-जांच दिवस पर

सोशल मीडिया और सत्य: तथ्य जांच का महत्व

संध्या अग्रवाल
लेखक साहित्यकार हैं।

आज का दौर डिजिटल है। हर पल खबरें, विचार और राय हमारे सामने आती हैं। हर व्यक्ति अपनी बात रखने में स्वतंत्र है, लेकिन क्या हर राय या हर सूचना भरोसेमंद होती है? यही सवाल हमें सोचने पर मजबूर करता है और यही विश्व तथ्य-जाँच दिवस का संदेश है। यह केवल एक दिन नहीं, बल्कि यह हमें याद दिलाता है कि सूचना का मूल्य समझना हमारी जिम्मेदारी है।

सोशल मीडिया पर हर खबर तेजी से फैलती है। कभी-कभी यह खबर सही होती है, कभी आंशिक और कई बार पूरी तरह झूठ। लोग बिना जांच-परख के इसे साझा कर देते हैं। इसके परिणामस्वरूप भ्रम, डर और समाज में तनाव पैदा होता है। तथ्य-जाँच न केवल सत्य की रक्षा करती है, बल्कि समाज को जागरूक और सशक्त भी बनाती है।

आज एआई और डिजिटल युग में, खबरें इतनी तेज़ी से फैलती हैं कि हमें कई बार फेक न्यूज भी सत्य प्रतीत होती हैं। ऐसे समय में हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। हर सूचना को निष्पक्ष तरीके से जाँचना और तथ्य की पुष्टि करना जरूरी है, ताकि समाज में झूठ और भ्रम न फैले। हम अक्सर भूल जाते हैं कि राय और तथ्य अलग चीजें हैं। राय व्यक्तिगत दृष्टिकोण, अनुभव या भावना होती है, जबकि तथ्य जाँच योग्य जानकारी होती है, जिसे प्रमाणित किया जा सके। जब राय को तथ्य की तरह फैलाया जाता है, तो यह समाज में भ्रम और विवाद का कारण बन सकता है।

आज हर व्यक्ति सोशल मीडिया पत्रकार बन गया है। कोई ट्वीट, पोस्ट या वीडियो देखता है और तुरंत प्रतिक्रिया देता है। यही प्रवृत्ति तथ्य-जाँच को आवश्यक बनाती है। सत्य की पहचान करना सिर्फ मीडिया का काम नहीं, बल्कि हम सभी की जिम्मेदारी भी है। अक्सर ऐसी खबरें हमारे जीवन की दिशा बदल देती हैं–छोटे निर्णयों से लेकर बड़े सामाजिक निर्णय तक। जांच परख के बिना साझा किया गया कोई भी तथ्य हमें और हमारे प्रियजनों को प्रभावित कर सकता है।

तथ्य-जाँच केवल तकनीकी प्रक्रिया नहीं है, यह सोचने की आदत भी है। स्रोत की पहचान, प्रमाण और तारीख़ की जांच, तटस्थ दृष्टिकोण रखना और विशेषज्ञ तथा आधिकारिक स्रोतों की पुष्टि करना, ये सभी कदम अपनाकर हम सिर्फ सत्य की रक्षा नहीं करते, बल्कि हमारे विचार और समाज की समझ भी गहरी होती है।

सत्य की खोज के साथ हमें यह भी याद रखना है कि रचनात्मक और सकारात्मक राय का योगदान समाज के लिए आवश्यक है। कभी-कभी लोग केवल आलोचना या नकारात्मक टिप्पणी करते हैं। तथ्य-जाँच और विचारशीलता से हम न केवल समस्या को समझते हैं, बल्कि समाधान की दिशा भी सुझा सकते हैं।

11 जनवरी को विश्व तथ्य-जाँच दिवस मनाने का उद्देश्य यही है कि हम यह समझें–सूचना शक्ति है, और शक्ति के साथ जिम्मेदारी भी आती है। हर खबर पर तर्क और प्रमाण अपनाएं, राय और तथ्य में अंतर जानें और डिजिटल तथा वास्तविक दुनिया में सोच-समझकर निर्णय लें।

विश्व तथ्य-जाँच दिवस केवल एक दिन नहीं, बल्कि हर बार सोचने और जवाबदेही की आदत बनाता है। जब हम हर सूचना की पुष्टि करना सीखते हैं, तो न केवल समाज में सत्य का योगदान देते हैं, बल्कि अपने जीवन में भी सकारात्मक बदलाव लाते हैं। सत्य, जागरूकता और जिम्मेदारी–ये तीन मूलमंत्र हैं। इस दिन को केवल याद करने के बजाय इसे जीने और अपनाने की प्रेरणा बनाना ही असली उद्देश्य है।

सोमनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

जिले भर के शिवालयों में भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया ऊँ नमः शिवाय मंत्र का जाप

सुबह सवेरे धार। सोमनाथ मंदिर गुजरात के जीर्णोद्धार के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में सोमनाथ स्वाभिमान पर्व -2026 के पावन अभियान अंतर्गत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आव्हान व प्रदेश संगठन के निर्देशानुसार केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती ने रविवार को नगर के धारेश्वर मंदिर में राजाधिराज धारनाथ बाबा का जलाभिषेक और दर्शन-पूजन कर ओमकार का जाप किया। इसी प्रकार जिले के मंडल क्षेत्रों के शिवालयों में भाजपा कार्यकर्ताओं ने नमः शिवाय का जाप किया।

सावित्री ठाकुर ने कहा कि सोमनाथ महादेव का ज्योतिर्लिंग केवल एक मंदिर नहीं बल्कि सनातन संस्कृति की अमर चेतना और भारत के आध्यात्मिक स्वाभिमान का प्रतीक है। इतिहास साक्षी है कि बीते एक हजार वर्षों में इस पावन धाम पर अनेक विदेशी आक्रांताओं ने आक्रमण किए उद्देश्य था हमारी आस्था और सांस्कृतिक आत्मा को नष्ट करना। किंतु हर विध्वंस के बाद सोमनाथ पहले से अधिक भव्यता और दृढ़ता के साथ पुनः खड़ा हुआ।

जिन शक्तियों ने इसे मिटाने का प्रयास किया, वे समय की धारा में विलीन हो गई, जबकि सोमनाथ आज भी अडिग खड़ा होकर यह संदेश देता है कि सनातन संस्कृति को आघात पहुंचाया जा सकता है पर मिटाया नहीं जा सकता। यही हमारी सभ्यतागत जीवटता है। इसी भाव को भावी पीढ़ियों तक पहुंचाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' मनाने का निर्णय लिया गया है।

भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती ने कहा कि गुजरात के पावन सोमनाथ मंदिर में आयोजित हो रहा है

> सोमनाथ महादेव ज्योतिर्लिंग मंदिर नहीं बल्कि सनातन संस्कृति की अमर चेतना और भारत के आध्यात्मिक स्वाभिमान का प्रतीक है।
> **- केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर**

'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व', जो भारत की सनातन संस्कृति, इतिहास और अध्यात्म का जीवंत प्रतीक है। इस दिव्य आयोजन के अंतर्गत 72 घंटे तक चलने वाला अखंड ओंकारनाद सम्पूर्ण वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत करेगा। निरंतर गूंजता नाद न केवल साधना का माध्यम बनेगा, बल्कि राष्ट्र की आत्मा और सांस्कृतिक चेतना को भी जागृत करेगा।

सोमनाथ मंदिर, जो सदियों से आस्था, साहस और स्वाभिमान का प्रतीक रहा है, एक बार फिर भारत की अमर विरासत का संदेश विश्व को देगा। यह पर्व हमें हमारी जड़ों से जोड़ते हुए आत्मगौरव और आध्यात्मिक एकता की अनुभूति कराता है। आइए, इस ऐतिहासिक और आध्यात्मिक क्षण के साक्षी बनें और राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना को सशक्त करें। प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन में यह आयोजन भारतीय संस्कृति की वैश्विक पहचान को और सुदृढ़ करेगा।

इस अवसर पर भाजपा नेता डॉक्टर शरद विजयवर्गीय, भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, मंडल अध्यक्ष जयराज देवड़ा विशेष रूप से उपस्थित रहे। जिला पदाधिकारी राखी राय,मोहित तातेड़, मनीष प्रधान सहित कैलाश पिपलोदिया,मीना दुबे,अनुसूईया वैष्णव व भाजपा नगर पदाधिकारी उपस्थित रहे। धारेश्वर मंदिर पुजारी पंडित अविनाश दुबे द्वारा विधि विधान से अभिषेक कराया गया।

मनरेगा में बदलाव मजदूरों के संवैधानिक अधिकारों पर हमला: निलय विनोद डागा

कांग्रेस जिला अध्यक्ष ने पत्रकार वार्ता में भाजपा सरकार के खिलाफ लगाए आरोप

बैतूल। जिला कांग्रेस कार्यालय में शनिवार को आयोजित प्रेस वार्ता में कांग्रेस जिला अध्यक्ष निलय डागा ने केंद्र की मोदी सरकार पर महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम में बड़े बदलाव कर गरीबों के काम करने और मजदूरी पाने के अधिकार छीनने का गंभीर आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि पहले मनरेगा के तहत ग्रामीण परिवारों को काम की कानूनी गारंटी थी और मांग करने पर 15 दिनों के भीतर रोजगार देना अनिवार्य था, लेकिन अब यह अधिकार समाप्त कर दिया गया है और काम सरकार की मर्जी पर निर्भर हो गया है। कांग्रेस जिला अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि मोदी सरकार ने मनरेगा के तहत तय न्यूनतम मजदूरी की गारंटी भी खत्म कर दी है, जबकि पहले हर साल मजदूरी बढ़ती थी और साल भर काम मिलने से परिवारों को आर्थिक सुरक्षा मिलती थी। केंद्र सरकार अब मनरेगा मजदूरी का केवल 60 प्रतिशत भुगतान करेगी, जबकि 40 प्रतिशत राशि राज्यों को वहन करनी होगी, जिससे राज्यों पर आर्थिक बोझ बढ़ेगा और बजट की कमी बताकर काम बंद किए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि मनरेगा पिछले 20 वर्षों से देश के मजदूरों की जीवनरेखा रही है, जिसे कमजोर करना गरीबों के खिलाफ साजिश है। डागा ने मनरेगा को वीबीजी रामजी

योजना में बदलने के फैसले पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि अगर कोई गांधी जी के नाम और उनके विचारों को लोगों के मन से हटाने की सोच रहा है तो यह कभी संभव नहीं है। उन्होंने सरकार पर मजदूर, किसान और आदिवासी विरोधी नीतियां अपनाने का आरोप लगाते हुए मनरेगा कानून बहाल करने और आदिवासियों, मजदूरों पर अत्याचार तुरंत रोकने की मांग की है।

मनरेगा और केंद्र सरकार के नए मॉडल वीबी योजना में अंतर- मनरेगा 2005 के तहत पूरे वर्ष काम, 100 दिन की कानूनी गारंटी, स्थानीय मांग आधारित कार्य, सोशल ऑडिट, ठेकेदारी पर रोक, 15 दिन में काम न मिलने पर बेरोजगारी भत्ता और 90 प्रतिशत केंद्र व 10 प्रतिशत राज्य की हिस्सेदारी थी। जबकि नए मॉडल में 60 दिन का अनिवार्य अवकाश, बजट आधारित योजना, ग्रामसभा की कमजोर भूमिका, बायोमेट्रिक हाजरी, भुगतान में देरी और राज्य की आर्थिक क्षमता पर निर्भरता रहेगी। जो किसी भी तरीके से मजदूर हितैषी योजना नहीं है। पीपीपी मोड में मेडिकल कॉलेज बनाने को लेकर गंभीर सवाल उठाते हुए श्री डागा ने कहा कि यह व्यवस्था गरीबों के इलाज को मुनाफे के हवाले करने जैसी है, जबकि चुनाव के समय वादा सरकारी मेडिकल कॉलेज का किया गया था। लगभग 38 एकड़ शासकीय भूमि, विशाल जिला चिकित्सालय का भवन और पूरा इन्फ्रास्ट्रक्चर सरकार का होने के बावजूद मेडिकल कॉलेज को पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मोड में देने पर सवाल खड़े हो रहे हैं कि आखिर निजी भागीदारी की जरूरत क्यों पड़ी।

निजी अस्पतालों की तरह महंगा होगा इलाज- पीपीपी मोड वाले मेडिकल कॉलेज में इलाज निजी अस्पतालों की तरह महंगा होगा, जहां गरीब मरीजों को मुफ्त या रियायती इलाज नहीं मिल पाएगा और जांच, ऑपरेशन, आईसीयू चार्ज व दवाइयों का खर्च आम जनता की पहुंच से बाहर होगा। आयुष्मान भारत और मुख्यमंत्री उपचार योजना जैसी सरकारी योजनाओं का लाभ भी सीमित कर दिया जाएगा, जिससे गरीब मरीजों को लाभ पाने के लिए भटकना पड़ेगा। पीपीपी मेडिकल कॉलेज व अस्पताल में निजी मरीजों को प्राथमिकता मिलेगी और गरीब व सरकारी मरीजों के लिए बेड कम रहेंगे। इसके साथ ही मेडिकल शिक्षा भी अत्यधिक महंगी होगी, जिससे आदिवासी बाहुल्य बैतूल जिले के विद्यार्थियों के लिए एमबीबीएस और पोस्ट ग्रेजुएट की पढ़ाई करना लगभग असंभव हो जाएगा। पीपीपी मॉडल में सरकारी नियंत्रण नगण्य रहेगा, निजी कंपनी की शर्तें हावी होंगी और शिकायतों पर प्रभावी कार्रवाई नहीं हो पाएगी। आरोप है कि इस मॉडल से ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों की उपेक्षा होगी और मेडिकल कॉलेज सेवा का केंद्र न बनकर व्यवसाय बन जाएगा, जिससे पूरे जिले की स्वास्थ्य व्यवस्था कमजोर होने का खतरा है।

ऐतिहासिक धार नगरी में अग्रवाल युवक-युवती परिचय सम्मेलन का गरिमामय एवं भव्य शुभारम्भ

300 से अधिक युवक- युवतियों ने मंच से दिया अपना परिचय

धार। धार में मध्यप्रदेश अग्रवाल महासभा द्वारा अग्रवाल समाज धार के सानिध्य में अखिल भारतीय अग्रवाल युवक-युवती परिचय सम्मेलन का शुभारंभ भगवा ध्वजारोहण कर श्री गणेश वंदना से हुआ। परिचय सम्मेलन के मुख्य अतिथि पूर्व गृहमंत्री उमाशंकर गुप्ता,केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर, अध्यक्षता म.प्र अग्रवाल महासभा प्रदेश अध्यक्ष कैलाश मित्तल,विशिष्ट अतिथि वैश्य महासम्मेलन मध्य प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष सुधीर अग्रवाल,वरिष्ठ समाजसेवी नारायण अग्रवाल 420 पापड़, महासभा के सुरेश गोयल,सुमित गर्ग,भाजपा जिलाध्यक्ष नीलेश भारती,नगरपालिका अध्यक्ष नेहा बोड़ाने, वैश्य महासम्मलेन प्रदेश महामंत्री निर्मल अग्रवाल रहे। मंच पर मुख्य संयोजक बबन अग्रवाल,अनन्तअग्रवाल,मनोहरलाल अग्रवाल,सयोंजक गोपीकिशन अग्रवाल एवं संरक्षकगण डॉक्टर उमेश मित्तल, डॉक्टर के सी जिंदल, वल्लभ अग्रवाल, संजय अग्रवाल, महेश अग्रवाल, महिला जिला अध्यक्ष रेनू अग्रवाल, कार्यकारी जिला अध्यक्ष अर्चना गर्ग, युवा अध्यक्ष अर्पित अग्रवाल मंचसीन रहे।

महाराजा अग्रसेन जी एवं महालक्ष्मीजी के मूर्ति, चित्र पूजन एवं दीप प्रज्वलन कर देशभर से आए प्रत्याशियों एवं पालकों की मौजूदगी में इस दो दिवसीय परिचय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। गणेश वंदना श्रीमती संतोष गुप्ता एवं श्रीमती कामना अग्रवाल ने प्रस्तुत

की। यह पहला ऐसा हाईटेक परिचय सम्मेलन है जिसका सीधा प्रसारण पूरे देश भर में किया जा रहा है।

जिसके बाद मुख्य अतिथियों का स्वागत सम्मान किया गया। पूर्व गृह मंत्री उमाशंकर गुप्ता ने कहा कि यह परिचय सम्मेलन समाज में पारदर्शी, सुसंस्कृत एवं संगठित वैवाहिक प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सार्थक पहल है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन समाज को जोड़ने युवाओ को उचित मंच प्रदान करने तथा पारिवारिक मूल्यों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

केंद्रीय राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर ने समाज बंधुओं को संबोधित करते हुए कहा कि परिचय सम्मेलन महती आवश्यकता होती है। इस तरह के आयोजन निरंतर होते रहना चाहिए। ऐसे आयोजन से समाज को गति मिलती है। परिचय सम्मेलन के माध्यम से दो अलग-अलग परिवारों का सामजंस्य एक ही मंच पर होता है। नगर पालिका अध्यक्ष धार नेहा बोड़ाने ने अग्रवाल समाज द्वारा नेतृत्व शक्ति का प्रदर्शन करते हुए इतना बड़ा परिचय सम्मेलन करवाया. शुभकामनाएं दी की आगे भी ऐसे सम्मेलन होते रहे। म.प्र महासभा प्रदेश अध्यक्ष कैलाश मित्तल ने कहा कि सामूहिक विवाह एवं वैवाहिक परिचय सम्मेलन जैसे आयोजन समाज में सामाजिक समरसता, पारदर्शिता एवं पारिवारिक मूल्यों को सशक्त करने का सशक्त माध्यम हैं। सुधीर अग्रवाल ने कहा कि ऐसे आयोजन समाज को एकजुट करते हैं और युवक-युवतियों को अपनी पसंद का जीवनसाथी चुनने का अवसर देते हैं। इससे समाज के लोगों के समय और धन की बचत होती है।

पुस्तिका 'रिश्ते' का लोकार्पण

राजस्थान,गुजरात, छत्तीसगढ़,महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश सहित अनेक प्रदेशों से आए 800 से अधिक युवक युवतियों के बायोडाटा की पुस्तिका 'रिश्ते' का लोकार्पण किया गया। पत्रिका समिति आशीष गोयल,प्रचुर गर्ग, राजेश अग्रवाल, हार्दिक मित्तल, पलाश मोदी, अर्चना गर्ग उपस्थित रहे।

स्वागत भाषण संयोजक गोपी किशन अग्रवाल, संचालन समन्वयक आशीष गोयल, अतिथि परिचय महाप्रबंधक पराग अग्रवाल और आभार प्रदर्शन महामंत्री जितेंद्र अग्रवाल ने किया। अतिथियों का स्वागत दुपट्टे,माला और स्मृति चिन्ह से किया गया।

अग्रमाधवी स्वर्णिम युगल सम्मान अंतर्गत 50 वर्ष पूर्ण हुए जोड़ों का हुआ सम्मान

अग्रमाधवी स्वर्णिम युगल सम्मान अंतर्गत विवाह के 50 वर्ष पूर्ण हुए जोड़ो का कुटुंब प्रबोधन का बढ़ावा देने हेतु अग्रवाल समाज धार एवं आसपास से विवाह के 50 वर्ष पूर्ण कर चुके 29 वैवाहिक जोड़ो को सपरिवार बेटी जमाई सहित आमंत्रित कर उनका मंच से सम्मान किया गया।

परिचय सम्मेलन में पधारे विभिन्न प्रदेशों से युवक युवती प्रत्याशियों द्वारा अपना अपना परिचय समिति द्वारा तैयार किये गए भव्य मंच से दिया गया। सम्मेलन में बड़ी संख्या में युवती प्रत्याशियों की उपस्थित ने सम्मेलन को चार चांद लगा दिये।

सम्मेलन में लगे राष्ट्र, धर्म, संस्कृति संरक्षण तथा सामाजिक चेतना एवं जनजागृति के विचारों के फ्लेक्स ने बाहर से आगंतुकों को प्रेरित किया एवं कई लोग उनके आगे सेल्फी फ़ोटो लेते नजर आये। जानकारी मीडिया प्रभारी श्याम मंगल लेबड़ एवं अशोक मित्तल ने दी।

'धुरंधर' ने बदला बॉक्स ऑफिस का इतिहास

'धुरंधर' ने यह साफ कर दिया है कि मजबूत कहानी, प्रभावशाली निर्देशन और स्टार अपील के दम पर एक हिंदी फिल्म न सिर्फ घरेलू बल्कि वैश्विक बॉक्स ऑफिस पर भी नया मानक स्थापित कर सकती है। सारे रिकॉर्ड टूट चुके हैं। इससे पहले जवान, पठान और 'केजीएफ : चैप्टर-2' जैसी फिल्मों ने यह आंकड़ा कई भाषाओं में रिलीज होकर छुआ था। फिल्म की सफलता अभूतपूर्व है। इस फिल्म ने जो हासिल किया, वह भारतीय सिनेमा के लिए एक ऐतिहासिक मोड़ है। अब सबकी निगाहें 'धुरंधर-2' पर टिकी हैं।

अब तक की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली स्पाई-एक्शन फिल्म 'धुरंधर' ने सिनेमा के बॉक्स ऑफिस के इतिहास में नया अध्याय जोड़ दिया। निर्देशक आदित्य धर की इस फिल्म ने न सिर्फ पुराने रिकॉर्ड तोड़े हैं। बल्कि, यह भी साबित किया कि एक सिंगल लैंग्वेज हिंदी रिलीज़ वैश्विक स्तर पर कितना बड़ा कमाल कर सकती है। 5 दिसंबर 2025 को रिलीज़ हुई 'धुरंधर' अब तक दुनिया भर में 1240 करोड़ की कमाई कर चुकी है। भारत में फिल्म का नेट कलेक्शन 831.40 करोड़ तक पहुंच गया। जबकि ग्रॉस कलेक्शन 981.58 करोड़ रुपए दर्ज किया गया है। ओवरसीज मार्केट से फिल्म ने 272.25 करोड़ रुपये का बिजनेस किया।

'धुरंधर' ने महज 33 दिनों में अल्लू अर्जुन की 'पुष्पा 2' (हिंदी वर्ज़न) को पीछे छोड़ते हुए खुद को अब तक की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हिंदी फिल्म के रूप में स्थापित कर दिया। खास बात यह कि फिल्म ने यह उपलब्धि बिना किसी मल्टी-लैंग्वेज रिलीज़ के हासिल की। यह पहली बार हुआ है जब कोई नॉन-मल्टी-लैंग्वेज हिंदी फिल्म 1000 करोड़ रुपए से ज्यादा की वर्ल्डवाइड कमाई करने में सफल रही। इससे पहले जवान, पठान और 'केजीएफ : चैप्टर-2' जैसी फिल्मों ने यह आंकड़ा कई भाषाओं में रिलीज होकर छुआ था।

ट्रेड एनालिस्ट का कहना है कि 'धुरंधर' की सफलता अभूतपूर्व है। इस फिल्म ने जो हासिल किया, वह भारतीय सिनेमा के लिए एक ऐतिहासिक मोड़ है। सिर्फ हिंदी भाषा में बनी फिल्म का मल्टी-लैंग्वेज ब्लॉकबस्टर्स को पीछे छोड़ देना यह साबित करता है कि दमदार कंटेंट और स्टार पावर आज भी दर्शकों को सिनेमाघरों तक खींच सकते हैं। 1240 करोड़ की वर्ल्डवाइड कमाई अपने आप में एक रिकॉर्ड है। यह पहली बार हुआ कि किसी नॉन-मल्टी-लैंग्वेज हिंदी फिल्म ने 1000 करोड़ क्लब में एंट्री की हो। 'जवान' और 'केजीएफ : चैप्टर-2' जैसी फिल्मों ने यह मुकाम कई भाषाओं में रिलीज होकर हासिल किया था।

अब जबकि 'धुरंधर 2' को पांच भाषाओं में रिलीज करने की योजना है, तो इस फ्रैंचाइज़ी से ग्लोबल लेवल पर और भी बड़े रिकॉर्ड्स की उम्मीद की जा सकती है। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर एक के बाद एक कई अहम पड़ाव पार किए। 16 दिनों में 500 करोड़, जिसने 'गदर 2' के लाइफटाइम कलेक्शन को पीछे छोड़ा। 26वें दिन 700 करोड़ क्लब में एंट्री। 30वें दिन 800 करोड़, जो किसी भी हिंदी फिल्म के लिए पहली बार हुआ। 7 जनवरी को फिल्म ने अकेले 5.70 करोड़ रुपए की कमाई की, जिससे इसका इंडिया नेट कलेक्शन 831.40 करोड़ तक पहुंच गया।

इतनी बड़ी सफलता के बावजूद 'धुरंधर' को मिडिल ईस्ट मार्केट में रिलीज़ नहीं किया जा सका। इस वजह से मेकर्स को करीब 10 मिलियन डॉलर के संभावित नुकसान का सामना करना पड़ा। इसके बावजूद फिल्म का वर्ल्डवाइड कलेक्शन इस स्तर तक पहुंचना इसे और भी खास बनाता है। 'धुरंधर' में रणवीर सिंह के साथ अक्षय खन्ना, संजय दत्त, आर. माधवन और अर्जुन रामपाल अहम भूमिकाओं में नजर आए। फिल्म की ऐतिहासिक सफलता के बाद इसके सीक्वल 'धुरंधर 2' का ऐलान पहले ही हो चुका है। 'धुरंधर-2' 19 मार्च को हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम पांच भाषाओं में रिलीज होगी।

'ऑस्कर' की दौड़ में 3 फिल्में, फाइनल नाम बाकी

जैसे-जैसे ऑस्कर 2026 का काउंटडाउन तेज हो रहा है, भारतीय सिनेमा एक बार फिर दुनिया भर का ध्यान खींच रहा है। क्योंकि, कई फिल्में ऑस्कर अवॉर्ड्स की जनरल एंट्री लिस्ट में शामिल हैं। ऋषभ शेट्टी की कांतारा: चैप्टर 1 के अलावा, दो और भारतीय फिल्में 'महावतार नरसिम्हा' और 'तन्वी: द ग्रेट' भी आधिकारिक तौर पर बेस्ट पिक्चर की दौड़ में शामिल हो गई।

'कांतारा: चैप्टर 1' और अश्विन कुमार द्वारा निर्देशित महावतार नरसिम्हा को इंडिपेंडेंट एंट्री के जरिए एकेडमी अवॉर्ड्स के लिए ऑफिशियली सबमिट किया गया। इनके साथ अनुपम खेर द्वारा निर्देशित तन्वी: द ग्रेट भी शामिल है, जिसे बेस्ट पिक्चर कैटेगरी के लिए इंडिपेंडेंट रूप से एंट्री दी गई है। 2026 के लिए ऑस्कर नॉमिनेशन की फाइनल लिस्ट 22 जनवरी, 2026 को घोषित होने वाली है। खास बात यह है कि जहां 'होम साउंड' को इस साल ऑस्कर के लिए भारत की ऑफिशियल एंट्री के तौर पर चुना गया, वहीं कांतारा: चैप्टर 1, महावतार नरसिम्हा और तन्वी: द ग्रेट के मेकर्स ने इंडिपेंडेंट रास्ता चुना, जिससे वे कई बड़ी कैटेगरी में नॉमिनेशन के लिए एलिजिबल हो गए। इनमें बेस्ट पिक्चर, बेस्ट डायरेक्टर, बेस्ट एक्टर और एक्ट्रेस, बेस्ट स्क्रीनप्ले, प्रोडक्शन डिजाइन और सिनेमैटोग्राफी शामिल हैं, जो एकेडमी के फाइनल इवैल्यूएशन पर निर्भर करेगा। 'महावतार नरसिम्हा' एक एनिमेटेड पौराणिक एक्शन एपिक है, जिसे जयपूर्णा दास ने लिखा है। यह फिल्म भगवान विष्णु के 10 अवतारों से प्रेरणा लेती है। इसे जमीनी कहानी के लिए खूब सराहा गया है। इस बीच 'तन्वी: द ग्रेट' 23 साल के गैप के बाद अनुपम खेर की डायरेक्शन में वापसी है। यह फिल्म 21 साल की तन्वी रैना की कहानी है, जो ऑटिज्म से पीड़ित एक युवा लड़की की कहानी है।

'राजा साहब' का सीक्वल पहली कहानी से अलग

प्रभास की फिल्म 'द राजा साहब' आज सिनेमाघरों में रिलीज हो गई। फिल्म के अंत में दर्शकों को एक सरप्राइज भी देखने को मिला। आगामी सीक्वल का नाम पता चल गया। निर्देशक मारुति दासारी जल्द इसका सीक्वल लेकर आने वाले हैं। इसके सीक्वल का नाम 'द राजा साहब 2: सर्कस 1935' है। फिल्म के

एंड क्रेडिट्स में इशारा किया गया। हालांकि, रिलीज की तारीख अभी घोषित नहीं की गई। इस साल की शुरुआत में, मारुति दासारी ने अपकमिंग सीक्वल के बारे में बात की थी और बताया था कि यह पार्ट 1 की सीधी कहानी नहीं होगी। 'द राजा साहब पार्ट 2' के लिए मुख्य कलाकार को फाइनल किया जा रहा हैं। लेकिन, यह उसी कहानी की अगली कड़ी नहीं होगी। इसकी कहानी बिल्कुल नई होगी और इसका सेटअप भी नया होगा। फिल्म हॉरर जॉनर में ही रहेगी, लेकिन इसे एक नए स्तर पर ले जाने की योजना बनाई जा रही हैं। इसकी स्क्रिप्ट ऐसी होगी जिसे हॉरर जॉनर में पहले किसी ने नहीं लिखा होगा। लेकिन अभी इस बारे में कुछ कहना जल्दबाजी होगी।

रियल बॉक्स

नए साल में भी परदे में नया कुछ नहीं

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

नया साल (2026) हिंदी सिनेमा के लिए सीक्वल, वॉर ड्रामा और मेगा सागा का साल बनता दिखाई दे रहा है। यहां बड़े बजट, स्टार कास्ट और पैन इंडिया की पहुंच मिलकर बॉक्स ऑफिस पर बड़ा धमाल कर सकते हैं। दर्शकों ने 2025 में कंटेंट ड्रिवेन फिल्मों की ताकत देख ली, 2026 में वही ट्रेंड स्टार पावर और फ्रैंचाइज़ी फिल्मों के साथ मिलकर और तेजी से लौटने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। 2026 की योजना में वॉर ड्रामा बॉर्डर-2, बैटल ऑफ़ गलवान, माईथोलॉजिकल एपिक रामायण, क्राइम थ्रिलर मर्दानी-3, स्पाई-यूनिवर्स : अल्फा, हॉरर कॉमेडी भूत बंगला, भेड़िया-2 और मैड कैप कॉमेडी 'धमाल-4' एक साथ लाइन में खड़ी हैं। ये साल दो बड़े ट्रेंड को और पुख्ता करेगा, ये हैं कंटेंट और फ्रैंचाइज़ी यानी सुरक्षित खेल। जैसे मर्दानी-3, धमाल-4 और भेड़िया-2.पैन इंडिया और 'यूनिवर्स' फिल्में हैं। यशराज की 'अल्फा' और पौराणिक 'रामायण' का मल्टी लैंग्वेज प्रदर्शन आसमान चढ़कर बोलेगा।

'बॉर्डर-2' दर्शकों में देशभक्ति जगाने वाली फिल्म है, जिसे जनवरी के रिपब्लिक-डे वीकेंड पर रिलीज किया जा रहा, जो सीधे 1997 की क्लासिक 'बॉर्डर' की याद दिलाएगी और भावनात्मक नॉस्टैल्जिया को कैश करेगी। इसमें सनी देओल के साथ वरुण धवन और दिलजीत दोसांज जैसे कलाकार हैं, यानी इसमें पुरानी पीढ़ी की इमेज और नई जनरेशन की स्टार वैल्यू का मिश्रण होगा। वॉर, एक्शन और देशभक्ति का यह मसाला मल्टीप्लेक्स और सिंगल स्क्रीन दोनों पर जादू दिखाए तो हैरानी नहीं होना चाहिए। इसके अलावा नितेश तिवारी निर्देशित 'रामायण (पार्ट-1) साल की सबसे बड़ी विज़ुअल सागा होगी, जिसे 2026 की सबसे महत्वाकांक्षी हिंदी फिल्म माना जा रहा है। इसकी स्केल और वीएफएक्स को 'इंडियन सिनेमा की अब तक की सबसे भव्य प्रोजेक्ट्स' में गिना जा रहा है। रणबीर कपूर, साई पल्लवी और यश जैसे नाम इसे पैन-इंडिया इवेंट बना सकते हैं। धार्मिक-सांस्कृतिक भावनाओं के बीच यह फिल्म अगर कंटेंट के स्तर पर बैलेंस साधने में सफल होती है, तो यह 2026 की सबसे ज्यादा चर्चित होने वाली फिल्म बन सकती है।

संजय लीला भंसाली की 'लव एंड वार' को मार्च में रिलीज़ के लिए प्लान किया जा रहा है। यह फिल्म प्रेम, संघर्ष और भव्य प्रोडक्शन वाली 'इमोशनल इवेंट' फिल्म होगी, जो भंसाली की पहचान है। संभावना है कि यह फिल्म 2026 के रोमांटिक ड्रामा स्पेस को आकर्षित करे। ठीक वैसे ही जैसे 2025 में 'सैयारा' ने रोमांस, लवर यूथ ऑडियंस को अपनी तरफ खींचा था। इसके अलावा धमाल-4, भूत बंगला, और भेड़िया-2 से कॉमेडी और हॉरर कॉमेडी की वापसी होने वाली है, जिसका 2025 में अभाव देखा गया। 'धमाल-4' पुराने गैंग की लालच और पागलपंती को नए ट्रेज़र-हंट के साथ फिर लौटा सकता है। प्रियदर्शन और अक्षय कुमार की जोड़ी 'भूत बंगला' में हॉरर कॉमेडी की क्लासिक टाइमिंग वापस लाने की कोशिश करेगी, जो कि हॉरर कॉमेडी पंच होता है। इसके गुड फ्राइडे वाले वीकेंड पर रिलीज का मतलब है फैमिली ऑडियंस को टारगेट करना। 'भेड़िया-2' वरुण धवन के क्रिएचर-यूनिवर्स को आगे बढ़ाएगी, जहां वीएफएक्स और डार्क ह्यूमर के साथ जंगल-लोककथा वाला देसी सुपरनैचुरल जोन मजबूत होगा।

इसी तरह यशराज की 'मर्दानी-3' और 'अल्फा' महिला केंद्रित एक्शन फिल्म है। 'मर्दानी-3' में रानी मुखर्जी एक बार फिर शिवानी शिवाजी रॉय के रूप में लौटेंगी और फ्रैंचाइज़ी के क्राइम थ्रिलर टोन को आगे बढ़ाएंगी। यह फिल्म मिड-रेंज बजट की है, लेकिन हाई इम्पैक्ट वाली कैटेगरी में मजबूती से खड़े होने ताकत रखती है। इसके पहले वाली दोनों 'मर्दानी' ने महिला दर्शकों को जबरदस्त आकर्षित किया था।

यशराज की ही स्पाई यूनिवर्स की 'अल्फ़ा' में आलिया भट्ट और शरवरी वाघ एक नई फीमेल-स्पाई जोड़ी के रूप में नजर आने वाली हैं। पठान, टाइगर, वार जैसी मेल डोमिनेंट फिल्मों की भीड़ में यह फिल्म जेंडर-बैलेंस की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगी। अगर फिल्म की एक्शन मजबूत रही, तो तय है कि यह फिल्म साथ में रिलीज होने वाली फिल्म की बखिया उधेड़ दे।

'बॉर्डर-2' में सनी देओल 'ग़दर-2' के बाद फिर देशभक्ति ड्रामा के पोस्टर-बॉय बनकर लौटेंगे। अगर फिल्म दर्शकों में अपनी इमोशन पकड़ बना लेती है, तो सनी की 'मास हीरो' इमेज नई पीढ़ी तक दोबारा पहुंचेगी। रणबीर कपूर और यश के लिए 'रामायण' प्रोजेक्ट करियर डिफाइनिंग साबित हो सकता है। एक तरफ रणवीर का देवदत्त नायक वाली धीर-गंभीर इमेज और दूसरी तरफ यश का पैन-इंडिया स्टारडम मिलकर इस फिल्म के हर कैरेक्टर को चर्चा में बनाकर रखेंगे। उधर, रानी मुखर्जी और आलिया भट्ट जैसी एक्ट्रेस 'मर्दानी-3' और 'अल्फा' के ज़रिए यह साबित कर सकती हैं, कि 2025 में दिखी कंटेंट ड्रिवेन और फीमेल सेंट्रिक फिल्मों की लहर 2026 में और पावरफुल रूप लेकर सामने आई। वरुण धवन के लिए 'बॉर्डर-2' और 'भेड़िया-2' का कॉम्बो 2026 को 'कमबैक ईयर' बना सकता है। एक तरफ वॉर ड्रामा और दूसरी तरफ हॉरर कॉमेडी ये दोनों अलग-अलग टोन में एक्सपोज़ होंगे। शाहिद कपूर 'ओ रोमियो' जैसे डार्क थ्रिलर में विशाल भारद्वाज के साथ लौटकर अपनी गंभीर अभिनेता वाली साख को और मजबूत कर सकते हैं। 2026 के थ्रिलर स्पेस में यह फिल्म क्रिटिक फेवरेट भी बन जाए, तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इमरान हाशमी 'आवारापन-2' के ज़रिए नॉस्टैल्जिक और इमोशनल एक्शन जोन में वापसी करेंगे। अगर कहानी ओरिजिनल 'आवारापन' जैसी इमोशन पकड़ बनाती है, तो उनकी इमेज को नया बूस्ट मिलना तय है।

रणबीर कपूर के पास 2026 में ज्यादा प्रमुख भूमिकाएं हैं। उनकी दो सबसे बड़ी और बहुप्रतीक्षित फिल्में हैं 'रामायण' और 'लव एंड वार।' ये दोनों बहुत बड़े प्रोजेक्ट हैं और दोनों के टॉपिक भी अलग हैं। 'रामायण' पौराणिक एपिक और 'लव एंड वार' रोमांटिक वॉर ड्रामा हैं। रणवीर की राम की भूमिका वाली फिल्म दिवाली के आसपास परदे पर उतरेगी। उनकी ये दोनों फिल्में 2026 के ऐसे प्रोजेक्ट हैं जिन पर सबकी नजर हैं। 'रामायण' को तो सबसे महंगी वीएफएक्स फिल्म माना जा रहा है। जबकि, 'लव एंड वार' को संजय लीला भंसाली की वापसी का प्रतीक कहा जा रहा। इस वजह से उनका स्क्रीन टाइम, प्रमोशन और बॉक्स ऑफिस फोकस साल भर बना रहेगा, जैसा 2025 में विक्की कौशल (छावा) और रणवीर सिंह (धुरंधर) के साथ हुआ। इस लाइन में शाहरुख खान हैं जिनकी 'किंग' इसी साल रिलीज होगी। सनी देओल भी 'बॉर्डर-2' और 'रामायण' में हैं, पर उनका रोल हनुमान का है। वरुण धवन के पास भी 'बॉर्डर-2' और 'भेड़िया-2' हैं, लेकिन फिर भी रणवीर कपूर की फिल्मों का पैमाना ज्यादा ऊंचा है।

बीते बरस (2025) में अक्षय खन्ना और बॉबी देओल जैसे कलाकारों ने निगेटिव शेड्स के साथ परदे पर जबरदस्त प्रभाव डाला। 2026 में 'दृश्यम-3' और कृष-4 जैसी फिल्मों की लाइन में ऐसे स्टार विलेन' का प्रभाव और बढ़ने की संभावना है, जो हीरो के बराबर चर्चा में रहते हैं। फ्रैंचाइज़ी फिल्मों में सपोर्टिंग और ग्रे-शेड कैरेक्टर को बड़ा स्क्रीन टाइम मिलने से कई मिड लेवल एक्टर्स के लिए 2026 बड़ा साल बन सकता है। 2025 में जहां छावा, धुरंधर और 'सैयारा' जैसी ओरिजिनल कहानियों ने साबित किया कि फिल्म के कलाकार नहीं उसकी ;कहानी ही राजा' है, वहीं 2026 में वही सीख बड़े बजट और फ्रैंचाइज़ी फॉर्मेट के साथ लागू होते दिखाई दे रही है। यानी अब सीक्वल भी तभी चलेंगे जब कंटेंट ताज़ा होगा। ओटीटी की चुनौती के बीच थिएटर फुटफॉल के लिए 2026 की फ़िल्में खुद को 'इवेंट' के रूप में बेचेंगी वॉर-ड्रामा की स्केल, माइथोलॉजी का विज़ुअल ग्रैंड्योर, स्पाई यूनिवर्स की कनेक्टेड स्टोरीज़ और हॉरर कॉमेडी का सामूहिक मज़ा, यह सब मिलकर बॉक्स ऑफिस पर बड़ा धमाका कर सकते हैं। इस नजरिए से अनुमान लगाया जा सकता है कि नया साल कुछ ऐसा नया मनोरंजन लाएगा, जो दर्शकों को अपने मोहपाश मुक्त नहीं होने देगा।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

फिल्मों में पानी के नाम पर बेईमानी जारी

अशोक जोशी

कहा जाता है कि जल ही जीवन है। देखा जाए तो जल हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। हमारे ग्रह में उतना ही पानी है जितना कि हमारे शरीर में पानी का प्रतिशत होता है। हमारे चारों और पानी ही पानी है। यही कारण

है कि हिंदी फिल्मों में भी पानी को भी महत्व दिया जाता रहा है। यह बात अलग है कि इस विषय पर अभी तक कोई सार्थक फिल्म नहीं बन पाई। कुछ साल पहले शेखर कपूर ने इसे बहुउद्देशीय फिल्म बताकर इसे बनाने की घोषणा भी की थी, लेकिन उस योजना पर पानी फिर गया।

हिंदी फिल्मों के शैशव काल से ही पानी अलग-अलग रूपों में हिंदी फिल्मों का बना रहा। कभी बरसात के रूप में, कभी नदियों के रूप में, कभी आंसुओं के रूप में तो कभी बाढ़ और सूखे की तबाही के रूप में। कभी फिल्मां में पानी ने डराया है तो कभी गुदगुदाया है। फिल्मों के शीर्षकों से लेकर गीतों में भी पानी रिमझिम कर बरसा है। जहां तक फिल्मी गीतों में पानी प्रतीक बनकर बरसा है। अपनी संगीतमय मधुरता के लिए ही नहीं पानी के मानवीय बिंबों के लिए भी याद किया जाता है। बावजूद इसके यह मानना पड़ेगा कि हिंदी सिनेमा में पानी की सबसे ज्यादा प्रस्तुति दर्शकों को गुदगुदाने के लिए इसके रोमांटिक पहलू को लेकर हुई है। शेखर कपूर ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 'पानी' बनाने की घोषणा की थी। पानी तो अभी तक नहीं बन सकी। सच तो यह भी है कि हिंदी सिनेमा ने पानी में भीगने से कभी संकोच नहीं किया। यहां तक कि हमारी पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' में भी महिला की भूमिका कर रहे सालुंके के साथ स्नान दृश्य फिल्माया था। तब से लेकर हर दूसरी फिल्म में नायिका भीग कर परदे पर कहर बरपाती रही।

देव आनंद की 'गाइड' और आमिर खान के 'लगान' में जब परदे पर पानी की बूंदे आसमान से बरसते दिखती हैं तो न केवल पर्दे पर अभिनय करते पात्र झूमने लगते है बल्कि सिनेमा हॉल में बैठे दर्शकों के मन में भी पानी की जीवनदायिनी अहमियत का अहसास हो जाता है। इस एहसास को पूर्णता देते हैं पानी की बूंदों के लिए तरसते किसान और फटी हुई धरती की पृष्ठभूमि में अल्लाह मेघ दे, पानी दे की गुहार। 'लगान' के 'घनन घनन देखो घिर आए बदरा..' में इसके बाद की खुशी की प्रतिध्वनि सुनी जा सकती है। 1971

में ख्वाजा अहमद अब्बास ने समय, समाज और सरोकार को पानी से जोड़ते हुए 'दो बूंद पानी' का निर्माण किया था। यह फिल्म राजस्थान में बन रहे गंगा सागर कनाल प्रोजेक्ट की पृष्ठभूमि में थी जिसमें अपना योगदान देने के लिए राजस्थान के एक सूखा ग्रस्त गांव से जलाल आगा अपना भरा-पूरा परिवार छोड़ कर आ जाता है कि यह प्रोजेक्ट राजस्थान के रेगिस्तान की तकदीर बदल देगा। कनाल तैयार हो जाता है, राजस्थान को पानी मिल जाता है, लेकिन गंगा सिंह को समाज के ही दुष्टों के कारण अपना परिवार खोना पड़ जाता है।

वैसे तो पानी पर दर्जनों फिल्में बनीं, लेकिन कथानक में पानी के सीधे नाता जोड़ती फिल्मों को याद करें तो सिर्फ 'मदर इंडिया' की ही याद आती है, 1957 में बनी इस फिल्म में एक औरत के संघर्ष और जीवट की पृष्ठभूमि में किसानों के लिए पानी की अनिवार्यता भी देखी जा सकती है। फिल्म का अंतिम दृश्य

रूप में आता है या संयोग के रूप में। हिंदी में गंगा को लेकर भी दर्जनों फिल्में बनी हैं, लेकिन बस राम तेरी गंगा मैली कह कर ही पल्ला झाड़ लिया हिंदी सिनेमा के विशिष्ट प्रतीक दृश्यों में माना जाता है जिसमें नहर से आ रहा पानी लाल होकर गांव के खेतों में फैल रहा है, क्योंकि उसमें नायिका राधा के बेटे बिरजू का खून भी मिला है। समाज विरोधी होने के कारण जिसे उसकी मां ने ही मार डाला है। आमतौर पर हिंदी सिनेमा में पानी का इस्तेमाल कहानी में ट्विस्ट के लिए ही किया जाता रहा है। राज कपूर की 'सत्यम शिवम सुंदरम' में पानी की बाढ़ नायक-नायिका को एक-दूसरे से करीब लाने में अहम भूमिका निभाता है। इसी तरह 'हिना' की कहानी की दिशा भी पानी ही बदल देती है। प्रियदर्शन की 'विरासत' में गांव की खूबसूरती देखते-देखते ग़ायब हो जाती है, जब बांध टूटने से पूरा गांव जलप्रलय में डूबने लगता है।

हकीकत तो यह है कि इस तरह के ज्यादातर दृश्यों में पानी का प्रयोग या तो प्राकृतिक आपदा के गया। किसी भी फिल्मों में गंगा-जमुना जैसी पावन नदियों की गंदगी जैसी समस्या को प्रस्तुत करने की कोशिश नहीं की गई। दिलीप कुमार की 'गंगा जमुना' में इन नदियों का संदर्भ केवल नायक और उसके भाई के नाम के रूप में लिया गया। अमिताभ बच्चन अभिनीत 'गंगा की सौगंध' का गीत इस पहचान को मुकम्मल रूप में रेखांकित करता है, 'मानो तो मैं गंगा मां हूं, ना मानो तो बहता पानी।

यदि पानी पर बनी फिल्मो का उल्लेख किया जाए तो गंगा, गंगा-जमुना, दो बूंद पानी, गंगा की सौगंध, नदिया के पार जैसे ही नाम याद आते हैं। लेकिन इन फिल्मों में भी पानी की अहमियत बताने में प्रायः कोताही बरती गई है। इसके विपरीत फिल्मी गानों में पानी का भरपूर दोहन किया गया। हर दूसरी फिल्म में पानी पर केंद्रित गीत मिल जाएंगे। इनमें पानी की सबसे अधिक अभिव्यक्ति इसके रोमांटिक पहलू को लेकर हुई है। सिर्फ दृश्यों में ही नहीं, जब भी अवसर मिला सिनेमा ने 'टिप टिप बरसा पानी और पानी ने आग लगा दी' जैसे बोलों से भी कतई संकोच नहीं किया। कहीं पानी में जले मेरा गोरा बदन से दर्शकों के तनमन में आग लगाई जाती है तो कही मैं तो आगे बढ़ गई पीछे किनारा बह गया जैसे गीतों में उथले पानी में अंग प्रदर्शन करती नायिका या पानी में भीगकर नायक से अंग लग जा बालमा की गुहार करती दिखाई देती है। बस मनोज कुमार ही बचे थे जिन्होने बेशक अपनी तमाम नायिकाओं को भिगोकर उनकी देह को पर्दे पर उतारा हो लेकिन खुद भरी बरसात में पानी रे पानी तेरा रंग कैसा गा कर सहानुभूति ले उड़े थे।

अपने तरल स्वभाव की वजह से पानी सिनेमा में हर रूप में दिखा, आंसुओं से लेकर सैलाब तक और प्यार, प्रसन्नता के प्रदर्शन से लेकर शोक की अभिव्यक्ति तक। 'कभी खुशी कभी गम' का वह दृश्य भला कैसे भुलाया जा सकता है जब नायक अपनी मजबूरी बताने नायिका के पास जा रहा होता है और उसे रास्ते से ही बरसात के बीच काले छातों की कतार दिखाई देती है और उसे पता चलता है कि नायिका के पिता नहीं रहे। ऐसा ही एक दृश्य अर्जुन फिल्म के मारधाड वाले दृश्य में दिखाई देता है। फिल्मों में वैसे तो पानी की समस्याएं दिखाई भी जाती है। लेकिन, पानी के लिए चिंताग्रस्त निर्माता यह भूल जाते हैं कि जिस पानी के काल्पनिक दृश्य को दिखाने के लिए वह फव्वारे चला रहे हैं उसके एक दृश्य के फिल्मांकन में लगभग 25 से लेकर 30 हजार लीटर पानी बहा दिया जाता है। लेकिन इसकी परवाह कोई ठीक वैसे भी कोई नहीं करता जैसी परवाह जनता को दूषित पानी पिलाने पर राजनेता नहीं करते बल्कि टैंकर पर अपना नाम पेंट करवाकर वाहवाही लूटने मे कोई कसर नहीं करते।

नकल में 'असल' जरूरी है...!

प्रकाश पुरोहित

'हम घर में सफाई पर ज्यादा ध्यान दंगे।' पत्नी से कहा।

'जैसी इंदौर नगर निगम में होती है?' पत्नी ने मुस्कराते हुए पूछा।

'फोकट बात मत करो।' मैं और भी कुछ '....' बोलने वाला था, नहीं बोला, मर्यादा का सवाल था।

'चलिए कहां से शुरू करें?' पत्नी को समझ आ गया, जुमला नहीं बोला गया है।

'पहली बात, अभी हम बाज़ार चलेंगे और... कम से कम पांच जोड़ी स्लीपर लेकर आएंगे।' मैंने कहा।

'स्लीपर यानी वही, मोदीजी वाली हवाई चप्पल, जिसे पहन कर आम आदमी पिछले दिनों इंडिगो का शिकार हुआ।'

पत्नी को ये बातें कौन बताता है, पता लगाना पड़ेगा।

'हां वही... हवाई चप्पल यानी स्लीपर, जो हम घर में पहन कर घूमते हैं।' राजनीति में उलझना नहीं चाह रहा था।

' पिछले माह ही तो खरीदी थी, पूरे घर के लिए, फिर से?'

'हां, हमारे लिए नहीं, दूसरों के लिए!'

'अब ये जूते-चप्पल बांटने का नया शौक कहां से चर्राया?'

'बांटने के लिए नहीं, घर के ही लिए।'

'ये डबल-डबल क्यों?'

'मेहमानों के लिए!'

'क्या कोई विदेश से आ रहे हैं? कौन आ रहा है, तुमने तो बताया ही नहीं।' थोड़ी घबराहट और नाराजी का मिलाजुला भाव था।

'कोई नहीं आ रहा है विदेश से।'

'तो फिर ये फिजूलखर्ची क्यों?' मैं जो भी करता हूं, फिजूल ही होता है।

'समझने की कोशिश करो, हमें सेहत का ध्यान रखना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि घर में सफाई रहे।'

उसने बीच में लपक लिया, व्यवस्था का सवाल उठा दिया।

'तो तुम्हें क्या लगता है, मैं घर की सफाई ठीक से नहीं करवाती हूं, पूरे समय बाई के पीछे लगी रहती हूं और तुम मुझे समझा रहे हो सफाई! कमर टूट जाती है सफाई करवाने में।' सही में दिल पर ले ली थी सफाई।

'मेरा यह मतलब नहीं था, बात को समझने की कोशिश करो। अच्छा यह बताओ, विदेशों में सफाई ज्यादा रहती है या अपने देश में?'

'मुझे तो इंदौर के बारे में पता था कि सबसे साफ शहर है, लेकिन नाली के पानी से मौत के बाद तो उसका भी भरोसा नहीं रहा, हां, विदेशों में ज्यादा सफाई रहती है... तो?' कह कर मेरा मुंह तकने लगी।

'कनाडा में यह नियम बन गया है कि कोई भी बाहर के जूते पहन कर अंदर नहीं आएगा।' इस उम्मीद से बताया था कि चौंक पड़ेगी, मगर वहां तो कोई असर नहीं था।

'तो हम भी कहां जूते पहन कर घर में आते हैं, बाहर रैक है ना, उसी में तो रखते हैं ना!' मुझे जानकारी दी गई।

'घर की नहीं, हर जगह और हर एक के लिए यह नियम है। वहां के दफ्तरों में भी जूते उतार कर जाना होता है।' गर्व से ज्ञान दिया। वह हंसने लगी 'अरे, सूट के नीचे स्लीपर, कितने विचित्र लगते होंगे, मैं तो हंसते-हंसते पागल ही हो जाऊं।' कहा और सही में हंसने लगी। पागल हो, उसके पहले रोकना जरूरी था।

'देखो, जब इतने साफ देशों में इतनी सावधानी बरती जा रही है तो हमें और ज्यादा सावधान रहने की जरूरत है, इसीलिए अब हम अपने घर के बाहर रैक में अतिरिक्त स्लीपर रखेंगे ताकि आने वाले पहले अपने जूते उतारें, स्लीपर धारण करें और फिर चरण कमल घर में धरें।'

'कैसे मालूम है कि हर बार पांच से ज्यादा मेहमान नहीं आएंगे? मेरे मायके वाले ही दस से कम तो आते नहीं हैं। बड़ा परिवार है हमारा। हां, तुम्हारे वाले कम हैं तो क्या सिर्फ उनके लिए रहेंगे स्लीपर?' झगड़ने के सदा-सुहागन मुद्दे पर आ गई थी।

'घर वालों की बात नहीं कर रहा, बाहर के मेहमान, के लिए!' सच कहूं उलझ गया था, झगड़े की कल्पना से! 'अगर घर और बाहर के मेहमान साथ या एक के बाद एक आ गए तो उनका जोड़-बाकी कैसे करोगे, क्या पर्ची निकालोगे या 'शोले' वाला सिक्का उछालोगे? किससे कहोगे कि आप जूते सहित अंदर और आप स्लीपर में आएं या बाकी से कह दो कल आना कि आज तो स्लीपर खत्म हो गए।' यह तो मैंने सोचा भी नहीं था कि वह इतना भी सोच सकती है, वह भी फौरन!

'ऐसा तो साल में दो-चार बार ही होगा ना!' कमजोर और दुबला तर्क दिया, यह तो मैं भी समझ रहा था।

'दफ्तर में यह नियम चल सकता है कि गिनती के कर्मचारी होते हैं और उनमें से आधे तो छुट्टी पर रहते हैं, लेकिन घर कोई दफ्तर थोड़े ही है कि रोज पांच आते हैं तो पांच ही आएंगे! मेरी किटी पार्टी की ही तीस मेंबर हैं, क्या सबके लिए स्लीपर खरीदती फिरूंगी या सभी से कहूं कि अपनी स्लीपर साथ लाएं?'

'जापान में ऐसा होता है कि बरसाती या कोट की तरह स्लीपर भी साथ रखते हैं।' मैंने ज्ञान बघारा!

'देखो ये चोचले विदेशों में ही रहने दो, हमारे यहां जैसा चल रहा है,चलने दो। याद है, तुम्हारे दोस्त आए थे बाहर से, जूते उतार कर बाहर रखे थे कि यहां उनके यही नियम है, क्या हुआ था, जूते चोरी हो गए थे उनके और अपने सात हजार ठुक गए थे. अब जूतों का बीमा तो होता नहीं है कि चोरी हो गए तो कोई बात नहीं, बीमा से ले लेंगे। फिर मेरे बर्थडे पर ही पच्चीस-तीस हो जाते हैं, तो क्या पांच को स्लीपर और बाकी को नंगे पैर रखोगे? या 'पहले आएं ,पहले पाएं' का नियम बनाओगे, कुछ तो भी खुराफात सूझती रहती है, इसलिए कहती हूं कि अखबार पढ़ने के बजाय सीरियल देखा करो, बेकार बातें दिमाग में नहीं आएंगी। अब तुम आगे जाकर धूप में बैठो। बाई आ गई है, मुझे सफाई करवानी है' कहते हुए उसने साड़ी का पल्लू यूं कमर में खोंसा, जैसे खुद ही झाड़ू उठाने वाली हो, सफाई के लिए!

राष्ट्रीय परिसंवाद या अहंकार का अधिवेशन

मात्र मनोज रूपड़ा का नहीं शिक्षा संस्कृति का अपमान

डॉ. स्वाति चौधरी

विश्वविद्यालय को लेकर हमारी सामूहिक कल्पना बड़ी उदात्त रही है। हम उसे ज्ञान का तीर्थ कहते आए हैं, जहाँ प्रश्न पूछना अपराध नहीं, योग्यता का प्रमाण होता है; जहाँ असहमति उद्दंडता नहीं, बौद्धिक ईमानदारी मानी जाती है। विश्वविद्यालय के सभागार को हम ऐसा स्थान मानते हैं, जहाँ विचार चलते हैं–लाठी नहीं, संवाद होता है–आदेश नहीं। किंतु, कभी-कभी यथार्थ इतनी निष्ठुरता से इस कल्पना का गला दबोच देता है कि व्यंग्य भी देर तक तय नहीं कर पाता–हँसे या रोए।

एक राष्ट्रीय परिसंवाद। नाम सुनते ही लगता है–देश भर की चेतना एक छत के नीचे इकट्ठा होगी। साहित्य अकादमी और हिंदी विभाग का संयुक्त आयोजन–यानी शब्दों की मर्यादा और विचारों की गरिमा का प्रमाण-पत्र पहले से ही दीवार पर टँगा हुआ। मंच पर अध्यक्षीय आसन, जिस पर बैठा व्यक्ति केवल प्रशासनिक पदाधिकारी ही नहीं, अकादेमिक विवेक का प्रतिनिधि माना जाता है। सामने श्रोता; विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक और आमंत्रित साहित्यकार। ...और इन्हीं में एक नाम–मनोज रूपड़ा। कोई आकस्मिक राहगीर नहीं, बल्कि हिंदी साहित्य का जाना-पहचाना, सम्मानित हस्ताक्षर।

सब कुछ सामान्य था, जब तक 'अध्यक्षीय वक्तव्य' अपने अधिकारों का विस्तार करते-करते विषय से इतना दूर ही निकल गया, कि विषय ने भी पीछे मुड़कर हाथ हिलाना बंद कर दिया। अध्यक्षीय वक्तव्य अकसर विषय से भटकते हैं–यह परंपरा है। किंतु, परंपरा और अधिकार के बीच एक महीन रेखा होती है, जिसे पार करते ही वक्तव्य आत्ममुग्ध एकालाप बन जाता है। उस क्षण सभागार में बैठे श्रोता केवल श्रोता नहीं रहते, वो समय के बंधक बन जाते हैं। ख़ैर,

...और तभी एक वाक्य उछला– 'आप बोर हो रहे हैं क्या? '

यह प्रश्न नहीं था, यह सत्ता की चुटकी थी। जैसे, मंच से यह तय किया जा रहा हो, कि कौन ऊबेगा? कौन आनंदित होगा? और किसे ऊबने का अधिकार है? यह सवाल उस साहित्यिक मंच पर पूछा गया, जहाँ श्रोता की मानसिक सक्रियता सबसे ज़्यादा मायने रखती है।

मनोज रूपड़ा ने कोई असंसदीय भाषा नहीं अपनायी। न स्वर ऊँचा किया, न मुद्रा बदली। उन्होंने मात्र इतना कहा, कि अध्यक्षीय वक्तव्य विषय से भटक रहा है। बस, यही अपराध था! एक वाक्य। नारा नहीं, निर्णय नहीं– संकेत मात्र। वही संकेत, जो हर गंभीर परिसंवाद को जीवित रखता है।

किंतु, यह संकेत अध्यक्षीय आसन तक पहुँचते-पहुँचते चेतावनी बन गयी। सत्ता को आईना दिखाना वैसे भी जोख़िम भरा काम होता है और जब आईना शब्दों का हो, तब जोख़िम और बढ़ जाता है। प्रतिक्रिया आयी –तीव्र, असंतुलित और भयावह रूप से निजी।

'आपको बुलाया किसने?'

यह प्रश्न नहीं था, यह विश्वविद्यालय की आत्मा से पूछा गया प्रश्न था–कि यहाँ बुलाए जाने का अर्थ क्या है? क्या आमंत्रण भी पद की कृपा से मिलता है? क्या साहित्यकार की उपस्थिति भी शासकीय अनुमोदन पर निर्भर है?

...और फिर अंतिम आदेश– 'यहाँ से निकल जाइए। '

इतना छोटा वाक्य और इतनी लंबी छाया। उस क्षण सभागार केवल एक इमारत नहीं रहा, वह सत्ता के दंभ का दृश्य बन गया। आमंत्रित अतिथि को बाहर जाने का आदेश–यह दृश्य किसी सामंती दरबार में तो समझ में आता है, विश्वविद्यालय में नहीं!

यह मात्र मनोज रूपड़ा का अपमान नहीं था। यह उस परंपरा का अपमान था, जिसमें अतिथि को प्रश्न पूछने का अधिकार होता है। यह उस अकादेमिक संस्कृति का अपमान था, जिसमें अध्यक्षीय वक्तव्य आलोचना से नहीं, संवाद से परिपूर्ण होता है। सबसे बढ़कर, यह उस विश्वविद्यालय का अपमान था, जिसने अपनी पहचान विचारों की स्वतंत्रता से बनायी थी 'गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़'।

विडंबना यह है, कि यह सब साहित्य के नाम पर हुआ। वही साहित्य, जिसने सत्ता से आँख मिलाकर बात करना सिखाया। वही साहित्य, जिसने असहमति को नैतिक साहस का रूप दिया। ...और आज उसी साहित्य के मंच पर असहमति इतनी असहनीय हो गयी, कि उसे बाहर का रास्ता दिखाना पड़ा।

कुलपति का पद भारी होता है–यह सच है। किंतु, पद का भार सहनशीलता बढ़ाने के लिए होता है, न कि उसे कुचलने के लिए। यदि पद पर बैठते ही यह भ्रम पैदा हो जाए, कि प्रश्न पूछना अनुशासनहीनता है और संवाद अवज्ञा, तो समझ लेना चाहिए, कि समस्या व्यक्ति की नहीं, मानसिकता की है।

यह घटना हमें एक नए विश्वविद्यालय मॉडल से परिचित कराती है–जहाँ सभागार संवाद का नहीं, अनुशासन का स्थल है; जहाँ अध्यक्षीय वक्तव्य विषय से भटके तो वह 'दृष्टि विस्तार' कहलाए और कोई श्रोता इशारा कर दे तो वह 'दुर्व्यवहार'। जहाँ आमंत्रण सम्मान नहीं, एहसान हो और प्रश्न पूछने से पहले यह देखना आवश्यक हो, कि कुर्सी कितनी ऊँची है।

व्यंग्य यहाँ अपने चरम पर पहुँच जाता है। विश्वविद्यालय, जहाँ शोधार्थी थीसिस में हर कथन के लिए संदर्भ देते हैं, वहाँ अध्यक्षीय वक्तव्य को संदर्भ की नहीं, श्रद्धा की आवश्यकता पड़ती है। जहाँ छात्रों से आलोचनात्मक दृष्टि की अपेक्षा की जाती है, वहीं मंच पर आलोचना असहिष्णुता पैदा कर देती है।

यह घटना एक चेतावनी है। आज एक प्रतिष्ठित साहित्यकार को बाहर निकाला गया, कल कोई शोधार्थी चुप कराया जाएगा, परसों कोई छात्र 'अनुशासन' के नाम पर दबा दिया जाएगा ...और धीरे-धीरे विश्वविद्यालय विचारों का घर नहीं, आदेशों का कार्यालय बन जाएगा।

सबसे दुःखद यह नहीं, कि अपमान हुआ; यह है, कि अपमान को सामान्य बनाने की कोशिश होगी। कहा जाएगा– 'गलतफहमी थी ', 'क्षणिक आवेश था ', 'दोनों पक्षों से चूक हुयी' ...आदि आदि। यही वह वाक्य हैं, जिनसे संस्थागत पतन की शुरुआत होती है।

साहित्य और विश्वविद्यालय दोनों ही आत्ममंथन से चलते हैं। यदि इस घटना पर केवल औपचारिक खेद जताकर आगे बढ़ जाया गया, तो यह खेद नहीं, सहमति होगी। सहमति उस विचार से कि पद असहमति से ऊपर है और कुर्सी संवाद से।

व्यंग्यकार, आलोचक व अन्य लेखक समुदाय के लिए यह दृश्य पूरी तरह तैयार है–एक विशाल सभागार, ऊँचा मंच और उससे भी ऊँचा अहं। नीचे बैठे शब्द, जिन्हें बोलने की अनुमति नहीं ...और बीच में एक साहित्यकार, जिसे यह याद दिलाने की सज़ा मिली, कि विश्वविद्यालय अब भी विश्वविद्यालय होने की परीक्षा दे रहा है।

यदि विश्वविद्यालय सचमुच समाज का पथप्रदर्शक बनना चाहते हैं, तो उन्हें यह तय करना होगा, कि वह प्रश्नों से डरेंगे या उनसे सीखेंगे? क्योंकि जिस दिन विश्वविद्यालय में प्रश्न पूछना अपराध बन गया, उस दिन डिग्रियाँ तो मिलती रहेंगी, लेकिन ज्ञान चुपचाप बाहर का रास्ता पकड़ लेगा।

फोटो: जगदीश कौशल